

■ एसआईपी के अलावा भी कुछ विकल्प दे सकते हैं | ■ मोटा पैसा कमाने के लिए आपको रणनीति बनाकर आगे बढ़ना होगा | ■ रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर के लिए एसआईपी पर्याप्त नहीं



पत्नी के साथ मिलकर बनाएं कल की प्लानिंग

- ▶ 1, 2 नहीं इन 5 ऑप्शन को फॉलो करके फुल मोज में कटेगा बुढ़ापा
- ▶ रिटायरमेंट प्लानिंग केवल एक व्यक्ति नहीं, पूरे परिवार की जिम्मेदारी
- ▶ कपल मिलकर सही समय पर निवेश और फाइनेंशियल प्लान बनाएं

अपने भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए अपनी पत्नी के साथ मिलकर अच्छी प्लानिंग करें। इससे आपका बुढ़ापा मस्ती में कटेगा। कहा भी गया है कि रिटायरमेंट प्लानिंग एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे परिवार की साझा जिम्मेदारी है। आने वाले कल को सुरक्षित करने के लिए सही समय पर सही इन्वेस्टमेंट प्लानिंग की बहुत जरूरत होती है। यही कारण है कि समय रहते रिटायरमेंट की प्लानिंग करना भी बहुत जरूरी होता है। आज के समय में रिटायरमेंट प्लानिंग केवल एक व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लिए एक शेयर होने वाली जिम्मेदारी होती है, खासकर कपल के लिए। अब आप रिटायरमेंट के लिए अपनी पत्नी के मिलकर बेहतर प्लानिंग करें। लाइफ के साथ मिलकर प्लानिंग बनाने से आप शानदार प्यूर बन सकते हैं।

बीमा स्कीम की समीक्षा करें
हर किसी के लिए एक सेफ रिटायरमेंट प्लानिंग के लिए बीमा बहुत जरूरी होता है। अपनी हेल्थ बीमा पॉलिसियों की समीक्षा करें और तय करें कि वे रिटायरमेंट के बाद के विकल्पों को कवर करती हैं। आपकी बढ़ती उम्र के साथ मेडिकल खर्च भी बढ़ते हैं, तो इसलिए पर्याप्त कवरेज होना हर किसी के लिए बहुत जरूरी होता है।

टाइम टू टाइम समीक्षा करें
आपकी रिटायरमेंट योजना हमेशा एक ऐसी नहीं रह सकती है जो इसलिए जीवन में बदलाव आते रहते हैं, तो ऐसे में अपनी वित्तीय योजना की समय-समय पर समीक्षा करना जरूरी है। और उसमें जरूरत के अनुसार बदलाव करना अहम होता है। हर साल या कुछ सालों में अपने निवेश, लक्ष्यों और बजट की समीक्षा करें ताकि आप सही रास्ते पर बने रहें। यानी कि वे कदम आपको और आपके जीवनसाथी को फाइनेंशियल स्थिरता और सुरक्षा के साथ-साथ एक आरामदायक और खुशहाल रिटायरमेंट के लिए तैयार करने में मदद कर सकते हैं।

खर्चों का आकलन करें
रिटायरमेंट के बाद की लाइफ के लिए जरूरी मंथली खर्चों का अनुमान लगाना बहुत जरूरी होता है। इसमें

करोड़पति बनना है तो आप जान लें निवेश के कुछ 'ब्लॉकबस्टर' टिप्स

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आजकल ज्यादातर लोग, स्पेशली युवा, अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग को पूरा करने के लिए सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) को अपना रहे हैं। एसआईपी शुरू करना फाइनेंशियल अनुशासन की दिशा में एक शानदार पहला कदम है, लेकिन, क्या केवल एसआईपी शुरू कर देना ही आने वाले कल के लिए काफी है? असल में लंबी अवधि के टारगेट जैसे रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने के लिए, केवल एसआईपी करना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए एक संपूर्ण और मजबूत प्लानिंग की आवश्यकता होती है। तो फिर आइए इस रिपोर्ट के जरिये जानते हैं निवेश के कुछ ब्लॉक बस्टर कदम जो आपको करोड़पति बनने में अहम भूमिका निभा सकते हैं और आपको कम समय में ही अच्छा मुनाफा दिलवाने में सक्षम हैं।

फाइनेंशियल टारगेट को परिभाषित करें

- एसआईपी तो बस एक निवेश का एक जरिया है, लेकिन टारगेट क्या है? सबसे पहले, आपको अपने सभी दीर्घकालिक लक्ष्यों को साफ रूप से परिभाषित करना चाहिए और एक गोल बनाकर आगे बढ़ना होगा।
- लक्ष्यों को पट्टा दें:** क्या आपका टारगेट 10 साल में बच्चों की हाई एजुकेशन है, 20 साल में रिटायरमेंट है, या 5 साल में घर के लिए डाउन पेमेंट है?
- लागत का अनुमान लगाएं:** हर टारगेट के लिए जरूरी राशि का अनुमान लगाएं, इसमें प्यूरचर की महंगाई को भी शामिल करें। उदाहरण के लिए, अगर आज बच्चों की इंजीनियरिंग की पढ़ाई पर 20 लाख रुपये खर्च होते हैं, तो 15 साल बाद महंगाई के साथ यह राशि कहीं अधिक होगी।
- वर्षों जल्दी:** जब आपको पता होगा कि आपको कब और कितने पैसे की जरूरत हो सकती है, तभी आप सही निवेश रणनीति बना पाएंगे।



पोर्टफोलियो को विविधतापूर्ण बनाएं

- एसआईपी तो इक्विटी में है, लेकिन क्या इतना काफी है? 'अपने सारे अंडे एक ही टोकरी में न रखें' यह निवेश का सबसे पुराना और सबसे अहम नियम है।
- इक्विटी के अलावा निवेश करें:** हमेशा अपने पोर्टफोलियो में सिर्फ एसआईपी ही ना रखें। उसमें इक्विटी के साथ-साथ डेट और अन्य संपत्तियों का मिश्रण भी होना ही चाहिए।
- विविधता के विकल्प:** आप अपनी रिस्क लेने की क्षमता अनुसार पब्लिक प्रॉविडेंट फंड (पीपीएफ), फिक्सड डिपॉजिट (एफडी), राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस), और यहां तक कि सोना या रियल एस्टेट जैसे ऑप्शन में भी निवेश कर सकते हैं।
- वर्षों जल्दी:** यह आपके पोर्टफोलियो में स्थिरता ला सकता है। यानी कि यदि शेयर बाजार में गिरावट आती है, तो आपके दूसरे निवेश आपके पोर्टफोलियो को गिरने से बचाते हैं।

बीमा और आपातकालीन निधि बनाएं

- आपकी यात्रा की सुरक्षा कैसे होगी? यानी कि एक मजबूत फाइनेंशियल योजना की नींव सुरक्षा पर टिकी होती है। अगर आप बिना बीमा और इमरजेंसी के निवेश करते हैं, तो एक भी दुर्घटना आपकी पूरी योजना को ध्वस्त कर सकती है।
- आपातकालीन निधि:** कम से कम 3 से 6 महीने के मासिक खर्चों के बराबर की राशि एक ऐसे खाते में रखें, जिसे आप आसानी से निकाल सकें। ये इमरजेंसी फंड नौकरी छूटने या मेडिकल इमरजेंसी जैसी स्थितियों में आपके एसआईपी को तोड़ने से बचाएगा।
- पर्याप्त बीमा:** अपने परिवार को फाइनेंशियल रूप से सेफ रखने के लिए पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस (खासकर टर्म प्लान) और हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें।
- वर्षों जल्दी:** यह आपके लॉन्ग टर्म निवेश को अप्रत्याशित वित्तीय झटकों से बचाता है।

आज ही बना लें मुश्किल वक्त के लिए 'एटीएम'

सुरीबत हम सभी की लाइफ में कब आ जाए हममें से कोई नहीं जानता है, लेकिन सुरीबत से पार पाने के लिए इमरजेंसी फंड का होना बहुत जरूरी होता है। असल में इमरजेंसी फंड एक ऐसी धनराशि होती है, जिसे आप किसी भी अप्रत्याशित खर्च या वित्तीय संकट के समय यूज करने के लिए अलग से रखते हैं। यह आपको अचानक आई परेशानियों, जैसे नौकरी छूटना, मेडिकल इमरजेंसी या घर की मरम्मत आदि से निपटने में मदद करता है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि इमरजेंसी फंड कैसे तैयार करें।

बजट बनाएं और लक्ष्य तय करें: आप सबसे पहले, अपने मंथली खर्चों का हिसाब लगाएं। इसके बाद आपका तय करें कि आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्चों को कवर करने के लिए कितने फंड की जरूरत पड़ा सकती है। यह साफ टारगेट आपको बचत करने में मदद कर सकता है।

छोटे कदम से शुरूआत करें: लाइफ में हमेशा एक बड़ा फंड बनाने में सभी को टाइम लगता है। तो आप हर महीने अपनी इनकम का एक छोटा हिस्सा बचाना शुरू कर सकते हैं, भले ही यह छोटी राशि हो, नियमित रूप से बचत करने से यह समय के साथ एक बड़ा फंड बन जाएगा।

बचत को ऑटोमेट करें: आप हमेशा के लिए बचत को अपनी आदत बनाने के लिए, अपनी सैलरी अकाउंट से एक अलग बचत खाते में हर मंथ एक फिक्स अमाउंट का ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट कर दें। ऐसा करने से आपको सैलरी आते ही इमरजेंसी के लिए बचत हो जाएगी और आप इसे भूल करके से बच जाएंगे।

कर्म कम करने को प्राथमिकता दें: तो अगर आप पर कोई हाई ब्याज वाला कर्ज (जैसे क्रेडिट कार्ड का कर्ज) है, तो सबसे पहले उसे चुकाने पर ध्यान देना चाहिए। हमेशा कर्ज से मुफ्त तरह से प्रो होने के बाद, आप अपने इमरजेंसी फंड के लिए अधिक बचत कर सकते हैं।

अलग और सुरक्षित जगह पर रखें: अपने इमरजेंसी फंड को अपने सामान्य बचत खाते से अलग रखें। इनको ऐसे ऑप्शन में इन्वेस्टमेंट करें जो सेफ हो और जिन्हें जरूरत पड़ने पर आसानी से निकाला भी जा सके।

कारोबार आइडिया

- अगर आप ऐसा बिजनेस चाहते हैं जिसकी मांग कभी कम न हो, तो आटे का बिजनेस करें
- भारत के कई हिस्सों में रोटी रोजमर्रा के भोजन का अहम हिस्सा, गुणवत्तापूर्ण आटे की डिमांड हमेशा रहती है व कमाई की संभावना लगातार

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी नौकरी के अलावा बिजनेस करके खुद को स्टेबल कर मोटी कमाई करना चाहते हैं तो आपके लिए आटे का बिजनेस बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इससे आप कम लागत में अच्छी कमाई का जुगाड़ लगा सकते हैं। रोटी भारतीय खानपान का अहम हिस्सा है, इसलिए इस बिजनेस की मांग हमेशा बनी रहती है। हर कोई चाहता है कि उसका बिजनेस लगातार चलता रहे और उसकी मांग कभी कम न हो। ऐसे में आटे का बिजनेस एक सुरक्षित और भरोसेमंद विकल्प बन सकता है। इसे शुरू करने के लिए लगभग 2.50 लाख रुपये तक का निवेश पर्याप्त है। भारत के उत्तर, मध्य और पूर्वी राज्यों में रोटी रोजाना के खानपान का जरूरी हिस्सा है, जिससे गेहूँ के आटे की खपत हमेशा बनी रहती है। यही कारण है कि इस कारोबार में मंदी आने की संभावना बेहद कम है। अगर आप सही मशीनरी, साफ-सुथरी प्रोसेसिंग और आकर्षक पैकिंग का इस्तेमाल करें, तो ये बिजनेस जल्दी ही स्थायी कमाई का जरिया बन सकता है। गुणवत्तापूर्ण आटे की हमेशा डिमांड रहती है और ग्राहक अच्छे ब्रांड को पसंद करते हैं। सही प्लानिंग के साथ आप कम लागत में इस बिजनेस की मजबूत शुरूआत कर सकते हैं और धीरे-धीरे इसे बड़े स्तर पर ले जा सकते हैं।

2.50 लाख में शुरू कर सकते हैं आटे का बिजनेस, हर महीने कर लेंगे मोटी कमाई

कहां से मिलेगा कच्चा माल
गेहूँ की उपलब्धता ग्रामीण इलाकों और उनके आसपास आसानी से हो जाती है। लोग हमेशा शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण आटा पसंद करते हैं, जिससे इस कारोबार का बाजार लगातार मजबूत बना रहता है। गेहूँ के लिए किसानों से संपर्क करें। इसके बाद जैसे ही फसल आए किसानों से गेहूँ खरीद लें। फसल के मौके पर आपको सस्ता अनाज मिल सकता है। इसे एक कमरे में स्टोर कर लें। इसके बाद असानी से इसकी पिसाई कर बेचते रहें। गेहूँ को अच्छे से सुखाकर स्टोर करेंगे तो यह खराब नहीं होगा और रोटी भी बढ़िया आएगी। खेतों में गेहूँ की फसल होली के बाद आ जाती है। इसलिए आपको गेहूँ खरीदने के लिए मार्च में की प्रयास शुरू कर देना चाहिए। सोधे खेतों से बढ़िया क्वालिटी का गेहूँ खरीदें और आ बनाकर बेचते रहें। सबसे पहले गेहूँ की धुलाई और सुखाने की प्रक्रिया पूरी करें। इसके बाद सुखाए हुए गेहूँ को मशीन से पीसकर आटा तैयार करें। अंत में इसे आकर्षक पैकिंग में भरें, ताकि ग्राहक तुरंत आकर्षित हों और ब्रांड पर भरोसा करें।

शुरुआती लागत पर ध्यान
इस बिजनेस में मशीनरी के लिए लगभग 1.25 लाख रुपये की जरूरत होगी, जिसमें चक्की, रोस्टर, सीलिंग मशीन, वजन तराजू, गैस कनेक्शन और बर्तन शामिल हैं। बर्किंग कैपिटल के रूप में करीब 1 लाख रुपये लगेंगे, जिसमें कच्चा माल, वेतन, बिजली और गैस का खर्च शामिल होगा। इसके अलावा, बिल्लिंग पर 25,000 तक खर्च रुपये आ सकता है। इस तरह कुल निवेश 2.50 लाख रुपये के आसपास होगा।

हर महीने कितना मुनाफा
मौजूदा आंकड़ों के मुताबिक, इस बिजनेस से हर महीने करीब 1.15 लाख रुपये की बिक्री हो सकती है। वहीं, मासिक खर्च करीब 1.05 लाख रुपये तक रहेगा। यानी आपको हर महीने लगभग 10,000 रुपये या उससे ज्यादा का शुद्ध मुनाफा मिल सकता है, जो बिजनेस बढ़ने के साथ और बढ़ेगा।

वर्षों है आटे का बिजनेस फायदेमंद

रोटी भारतीय खानपान का अहम हिस्सा है, इसलिए इस बिजनेस की मांग हमेशा बनी रहती है। छोटे निवेश से भी इसकी शुरुआत की जा सकती है और क्वालिटी व पैकिंग पर ध्यान देकर इसे तेजी से बढ़ाया जा सकता है। सही मार्केटिंग के साथ आप इसे एक भरोसेमंद ब्रांड में बदल सकते हैं।

आटा बेचने के लिए विकल्प

- ▶ **भारत आटा बिक्री केंद्र:** सरकार द्वारा संचालित भारत आटा बिक्री केंद्रों पर आटा बेचा जा रहा है, जहाँ इसकी कीमत 27.50 रुपये प्रति किलोग्राम है। ये केंद्र देशभर में 800 मोबाइल वैन और 2,000 से अधिक दुकानों के माध्यम से आटा बेच रहे हैं।
- ▶ **मदर डेयरी के सफल स्टोर:** आप मदर डेयरी के सफल स्टोर से भी भारत ब्रांड का आटा खरीद सकते हैं।
- ▶ **नाफेड, एनसीसीएफ और केंद्रीय भंडार:** सरकार ने नाफेड, एनसीसीएफ और केंद्रीय भंडार के माध्यम से भारत आटा और चावल की खुदरा बिक्री शुरू की है।
- ▶ **स्थानीय बाजार:** आप अपने स्थानीय बाजार में भी आटा बेच सकते हैं या खरीद सकते हैं। कई स्थानीय बाजारों में आटे की दुकानें होती हैं जो ताजा और स्वादिष्ट आटा बेचती हैं।
- ▶ **आनलाइन प्लेटफॉर्म:** आप ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करके भी आटा बेच सकते हैं या खरीद सकते हैं। कई ऑनलाइन स्टोर और वेबसाइटें आटे की बिक्री करती हैं।

अब नया इनकम टैक्स कानून देगा लाखों टैक्सपेयर्स को बड़ी राहत

जानकारी
बिजनेस डेस्क

सद ने इनकम टैक्स बिल 2025 का संशोधित रूप से पास करते समय ऐसी कई गलतियों या खामियों को ठीक कर दिया है, जो पुराने ड्राफ्ट में हो गई थीं। इन संशोधनों को पास किए जाने से देश के लाखों टैक्सपेयर्स को भारी राहत मिलेगी। केंद्र सरकार द्वारा किए गए इन बदलावों में निल टीडीएस सर्टिफिकेट, हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन, नॉन-एम्प्लॉइज के लिए पेंशन छूट और गुमाना दान के नियमों में सुधार जैसे कई अहम प्रावधान शामिल हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसी कुछ बहम बदलाव जो टैक्सपेयर्स के ऊपर कई अच्छे असर डालेंगे। इससे आयकर रिटर्न भरना भी आसान हो जाएगा और कोई दिक्कत नहीं आएगी।

जीरो टीडीएस सर्टिफिकेट पर सुधारी गड़बड़ी

पुराने इनकम टैक्स एक्ट 1961 में धारा 197 के तहत निल यानी जीरो और लोअर टीडीएस सर्टिफिकेट दोनों का प्रावधान था, लेकिन नए बिल के शुरूआती ड्राफ्ट में निल शब्द हटा दिया गया था। इससे उन टैक्सपेयर्स के लिए परेशानी खड़ी हो सकती थी, जिनकी आय बेसिक छूट सीमा या सेक्शन 87ए रिबेट के बाद टैक्स फ्री होती है। संशोधित बिल में अब फिर से निल शब्द जोड़ दिया गया है, जिससे साफ हो गया है कि जरूरत पड़ने पर टैक्सपेयर्स निल टीडीएस सर्टिफिकेट ले सकते हैं। इससे अनावश्यक विवाद और रिफंड के झंझट से बचा जा सकेगा।

नॉन-एम्प्लॉइज को मिलेगी पेंशन टैक्स छूट

पहले ड्राफ्ट में कम्प्यूटेड पेंशन पर छूट सिर्फ कर्मचारियों को दी गई थी, जबकि मौजूदा कानून में यह सुविधा नॉन-एम्प्लॉइज को भी मिलती है, बशर्ते पेंशन अप्रूव्ड पेंशन फंड से आई हो। समिति ने इस असमानता को दूर करते हुए सिफारिश की कि नॉन-एम्प्लॉइज को भी यह छूट दी जाए। संशोधित बिल में यह बदलाव कर दिया गया है, जिससे अब सभी पात्र लोग, चाहे वे सैलरीड हों या न हों, पेंशन की पूरी राशि पर छूट पा सकेंगे।

हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन की स्पष्टता

नए बिल में साफ कर दिया गया है कि हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर 30% का स्टैंडर्ड डिडक्शन म्यूनििसिपल टैक्स घटाने के बाद ही मिलेगा, जैसा कि मौजूदा कानून में है। इसके अलावा, पहले ड्राफ्ट में प्री-कंस्ट्रक्शन लोन इंटेरेस्ट डिडक्शन सिर्फ सेल्फ-ऑक्ज्यूपाइड प्रॉपर्टी के लिए था, जिससे किराए पर दी गई प्रॉपर्टी के मालिकों को नुकसान होता। संशोधित बिल में अब किराए पर दी गई या मानी हुई किराए पर दी गई प्रॉपर्टी के लिए भी यह डिडक्शन बहाल कर दिया गया है।

गोपनीय दान पर छूट के पुराने नियम बहाल

गैर-लाभकारी संगठनों के लिए पुराने कानून में कुल डोनेशन का 5% तक गुमाना या गुप्त दान टैक्स फ्री होता था। नए बिल के पहले ड्राफ्ट में इसे गुमाना दान का 5% कर दिया गया था, जिससे छूट का दायरा काफी घट जाता। समिति की सिफारिश के बाद संशोधित बिल में अब फिर से कुल डोनेशन का 5% वाला प्रावधान बहाल कर दिया गया है। इससे एनजीओ और चैरिटेबल ट्रस्ट पर टैक्स का बोझ नहीं बढ़ेगा।

- संसद ने नए कानून को पास करते समय कई खामियों को ठीक किया
- पुराने ड्राफ्ट में कई खामियां सामने आई थी, लोगों को हो रही थी परेशानी
- निल टीडीएस सर्टिफिकेट, हाउस प्रॉपर्टी इनकम पर स्टैंडर्ड डिडक्शन बटले
- नॉन-एम्प्लॉइज के लिए पेंशन छूट और गुमाना दान के नियमों में भी सुधार किए

कर्मशैल्य प्रॉपर्टी पर नियम में सुधार

पहले ड्राफ्ट में सिर्फ ऑक्ज्यूपाइड कर्मशैल्य प्रॉपर्टी को हाउस प्रॉपर्टी इनकम के टैक्स से बाहर रखा गया था, जिससे खाली पड़ी बिजनेस प्रॉपर्टी पर भी नोशनल रेट लगाने का खतरा था। समिति ने सुझाव दिया कि मौजूदा कानून की तरह ऑक्ज्यूपाइड और वैकेंट दोनों तरह की कर्मशैल्य प्रॉपर्टी को बाहर रखा जाए। संशोधित बिल में यह सुधार कर दिया गया है, जिससे बिजनेस के लिए रखी गई लेकिन फिलहाल खाली पड़ी प्रॉपर्टीज पर अनावश्यक टैक्स का टेंशन टल गया है।

नया इनकम टैक्स कानून, जिसे आयकर (नंबर 2) विधेयक, 2025 के रूप में जाना जाता है, लोकसभा द्वारा पारित किया गया है। यह विधेयक पुराने आयकर अधिनियम, 1961 की जगह लेगा और 1 अप्रैल, 2026 से लागू होगा।

कर ढांचे में बदलाव

- नई कर व्यवस्था में छूट की सीमा को बढ़ाकर 12 लाख रुपये कर दिया गया है, जिससे 12 लाख रुपये तक की आय वाले व्यक्तियों को कोई कर नहीं देना होगा।
- 80एम कटौती को बहाल किया, जो कंपनियों को अंतर-कॉर्पोरेट लाभांश को कटौती के दावे की अनुमति देता है।
- टीडीएस और टीसीएस में बदलाव**
- टीडीएस की सीमा बढ़ा दी गई है, जैसे कि वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज आय पर टीडीएस की सीमा 50,000 रुपये से बढ़ाकर 1,00,000 रुपये कर दी गई है।
- टीसीएस की दरें बदली हैं, जैसे ओवरसीज रेंटमेंट्स स्कीम के तहत 7 लाख से लेनदेन पर टीसीएस की दर 0.5% से हटा दी है। अब 10 लाख से अधिक लेनदेन पर लागू होगी।
- अन्य बदलाव**
- धारा 206एबी और 206सीसीए को हटा दिया गया है, जिससे छोटे करदाताओं को राहत मिलेगी।
- यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) के तहत कर लाभ बढ़ा दिए गए हैं।
- स्टार्टअप्स के लिए 100% कर छूट की अनुमति होगी जो 1 अप्रैल, 2030 से पहले स्थापित किए गए हैं।

खबर संक्षेप

उत्तराखंड के पर्यवेक्षक बने

राव नरेंद्र सिंह

नारनौल। कांग्रेस के जिला प्रवक्ता हरदीप गहली ने बताया कि संगठन को लेकर पार्टी लगातार जमीनी स्तर पर कार्य कर रही है। अखिल

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हाल ही में पंजाब, उत्तराखंड, झारखंड व ओडिशा राज्य के जिला अध्यक्षों की नियुक्ति के लिए कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पर्यवेक्षक नियुक्त किए हैं, जिसमें प्रदेश के पूर्व मंत्री राव नरेंद्र सिंह को उत्तराखंड राज्य का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया, उनकी यह नियुक्ति जिले के लिए गौरव की बात है। हरदीप गहली ने कहा कि इससे पूर्व में भी शीर्ष नेतृत्व द्वारा राव नरेंद्र सिंह को पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, गुजरात व हाल ही में हरियाणा प्रदेश में हुए लोकसभा चुनावों में रोहताक जैसी लोकसभा सीट का पर्यवेक्षक बना कर भी उनका कद बढ़ाने का काम किया था।

मेले में लगा निःशुल्क मेडिकल कैम्प

महेन्द्रगढ़। केसरिया बाबा के जन्माष्टमी पर्व पर मांडोला धाम में लगाने वाले तीन दिवसीय मेले पर श्री मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल की टीम ने मेला प्रबंधक कमेटी के आग्रह पर एक विशेष निःशुल्क हेल्थ कैम्प का आयोजन किया। मेले में श्रद्धालु बाबा केसरिया के दरबार में आशीर्वाद लेने व मन्त्र मांगने के लिए पहुंचे। इस दौरान आयोजित तीन दिवसीय मेडिकल कैम्प में आमजन, ग्रामवासी, श्रद्धालु और खिलाड़ी वर्ग सहित हजारों लोगों ने स्वास्थ्य जांच एवं चिकित्सा परामर्श का लाभ उठाया। मेडिकल टीम के उत्कृष्ट कार्य के लिए केसरिया बाबा मंदिर कमेटी ने अस्पताल संचालक रामवीर सिंह चौहान का आभार व्यक्त किया।

सीईटी के लिए रोडवेज स्टॉफ सम्मानित

नारनौल। हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित सीईटी परीक्षा में बसें की सफल व्यवस्था करने पर जिला प्रशासन ने हरियाणा राज्य परिवहन नारनौल डिपो को सम्मानित किया है, जिसमें डिपो के चालक/परिचालक/कर्मचारियों के अथक प्रयास व मेहनत से संभव हो पाया। इसके लिए सभी साधियों का सहयोग रहा। सम्मानित मुख्य निरीक्षक ब्रह्मप्रकाश, बालाकिशन परिचालक व रामवीर परिचालक को डिपो प्रधान हंसराज यादव ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

टीपेंद्र शेखावत बने सतनाली व्यापार मंडल प्रधान

सतनाली मंडी। करवा स्थित जमुवाय माता मंदिर परिसर में शुक्रवार को व्यापारी संगठनों की बैठक का आयोजन किया गया। रतनलाल मिश्रा के अनुमोदन पर सर्वसम्मति से बैठक को अध्यक्षता वरिष्ठ व्यापारी पितराम गोयल एवं बशेशरालाल ने की। इस अवसर पर सतनाली व्यापार मंडल की कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें टीपेंद्र शेखावत को प्रधान, प्रमोद अग्रवाल को उपप्रधान, महेश माथोपाध्याय को सचिव, जितेंद्र तायल को सहसचिव, विनोद अग्रवाल डिगरोला वाले को कोषाध्यक्ष, मनीष मित्तल को मीडिया प्रभारी आदि रहे।

गोष्ठी

नेशनल मॉडल स्कूल में गोष्ठी आयोजित

प्रचार्य ने गोष्ठी में आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया

नेशनल मॉडल स्कूल में विभाजन विभीषिका व अखंड भारत संकल्प दिवस पर एक प्रबुद्धजन गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में मुख्यातिथि हर्षकि कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार व विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला संघ चालक कैप्टन हंसराज रहे। विशिष्ट अतिथि विभाजन विभीषिका के देश को प्रत्यक्ष सहन करने वाले वह देखने वाले 88 वर्षीय राधा कृष्ण मक्कड़ रहे व गोष्ठी की अध्यक्षता प्रचार्य ओमप्रकाश यादव ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने

जिलेभर में देशप्रेम और उत्साह से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस का महापर्व देशभक्ति के रंग में सजे विद्यार्थियों ने किया शहीदों के बलिदान को नमन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

राव सुल्तान सिंह सीनियर सेकेंडरी स्कूल निम्बेहड़ा में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। संस्था निदेशक एडवोकेट सतपाल यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि प्राचार्य राजकुमार शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि एडवोकेट सतपाल यादव ने ध्वजारोहण किया और परेड की सलामी ली। अपने संबोधन में उन्होंने देशवासियों को 79वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में भारत की आजादी के इतिहास पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अत्याचारों के खिलाफ देशवासियों ने संघर्ष किया और अपने प्राणों की बाजी लगाकर देश को आजाद कराया। उन्होंने महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस और लोकमान्य तिलक जैसे महान नेताओं के योगदान को भी याद किया। अंत में मुख्य अतिथि ने देश के लिए शहीद हुए वीर सपनों को नमन किया।



महेन्द्रगढ़। कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति विद्यार्थी। व सतनाली। कार्यक्रम में विशेष उपलब्धि पर छात्रा को सम्मानित करते प्राचार्य व अन्य। फोटो: हरिभूमि

शहीदों को किया नमन

मंडी अटेली। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिहमा में 79वां स्वतंत्रता दिवस बड़े धूमधाम से देशभक्ति की उमंग के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के गांव के सबसे वरिष्ठ भूतपूर्व सैनिक रामस्वरूप द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराकर और राष्ट्रगान गाकर किया गया। विद्यार्थियों ने मनमोहक देशभक्ति गीत, कविताएं, नृत्य, भाषण प्रस्तुत कर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। मंच संचालन करते हुए मनोज शर्मा ने स्वतंत्रता दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। इस मौके प्राचार्य कृष्ण कुमार ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को शिक्षा, अनुशासन और राष्ट्रहित में कार्य करने की सलाह दी। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।



मंडी अटेली। भूतपूर्व सैनिक रामस्वरूप को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि



महेन्द्रगढ़। कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति विद्यार्थी। व सतनाली। कार्यक्रम में विशेष उपलब्धि पर छात्रा को सम्मानित करते प्राचार्य व अन्य। फोटो: हरिभूमि

सतनाली में धूमधाम से मनाया स्वतंत्रता दिवस

मंडी। राजकीय एलएनबी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सतनाली में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्राचार्य जयवीर सिंह ने वीर शहीदों को नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर भूतपूर्व सैनिक गुगन सिंह शेखावत व विश्वम्बर सिंह शेखावत ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करते हुए कहा कि आजादी के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले वीर शहीदों को हमेशा याद रखना चाहिए। इस दौरान विद्यार्थियों ने देशभक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नांवा में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल इंचार्ज बाबूलाल यादव ने आजादी के लिए प्राणों को न्योछावर करने वाले वीर शहीदों को नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान उन्होंने कहा कि आजादी के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले वीर शहीदों को हमेशा याद रखना चाहिए। इस दौरान स्कूल स्टाफ सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित रहे। पी.आर.एस इंटरनेशनल सीनियर सेकेंडरी स्कूल सतनाली में स्वतंत्रता दिवस अवसर पर समारोह आयोजित कर ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर संस्था निदेशक अमरनाथ सुरोलिया व प्राचार्य संदीप शर्मा ने स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आजादी के नायक वीर शहीदों की बलिदान ही आज हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर सतनाली में भजन संध्या कार्यक्रम आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सतनाली मंडी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर करबे के पुराना बाजार स्थित प्राचीन श्री ठाकुरजी मंदिर में पं. कृष्ण कुमार शर्मा नावां की भजन मंडली द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन संध्या का पं. कृष्ण शर्मा ने गणेश वंदना के साथ शुभारंभ किया। भजन संध्या में उन्होंने आज्या नंद के दुलारे हो रोवे अकेली मीरां..., भजो रे मन कृष्ण हरि..., गोपी-उद्धव संवाव पर भजन श्याम मेरे मन यादो..., लेके नै उल्हाणा आदि तरे नंदलाल का... आदि भजन प्रस्तुत कर उपस्थित श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। गायक नरसिंह यादव डिगरोला ने राधे तरे चरणों की..., सांवरिया मतन्या रोके..., भगत सुदामा हम बचपन के



सतनाली। श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित संध्या में प्रस्तुति देते कलाकार।

दोनों गुरुभाई..., बता मेरे यार सुदामा रै..., तेरा कृष्ण काला री..., भगत के वश में है भगवान... आदि सहित अनेक भजनों की सुंदर प्रस्तुति दी, गायक ओमपाल सिंह ने श्री कृष्ण भगवान दया का धाम बतावै से... सहित अनेक भजन प्रस्तुत किए वहीं गायक सुनील मिश्रा ने सखी री बांके प्रेम की से हमारी लड़ गई अंखियां..., लागी लगन मन तोड़ना..., आंगन में खेल रहा नंद का दुलारा..., नगर में जोगी आया जिसे कोई समझ नहीं पाया... आदि सुंदर भजनों की प्रस्तुति दी। भजन संध्या में ढोलक पर कैलाश शर्मा अहरोदिया एवं संजय सुरोलिया ने साथ निभाया। भजन संध्या के बाद मध्यरात्रि में भोग लगाकर प्रसाद वितरण किया गया। इस अवसर पर अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

विधायक ओमप्रकाश यादव ने स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण कर ली मार्च पास्ट की सलामी

■ पुलिस, कॉलेज और स्कूली बच्चों ने परेड व मार्च पास्ट का किया शानदार परदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

स्थानीय मॉडल संस्कृति राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस के पर्व 79 वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में विधायक ओमप्रकाश यादव ने ध्वजारोहण कर मार्च पास्ट की सलामी ली। इससे पहले मुख्य अतिथि ने शहीद स्मारक व महान योद्धाओं के स्मारक पर पहुंचकर देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर शहीदों को पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान पूर्व मंत्री रामबिलास शर्मा और एसडीएम कनिंका गोयल



महेन्द्रगढ़। मार्च पास्ट की सलामी लेते विधायक कंवर सिंह यादव।

(आईएसएस) भी उपस्थित रहे। विधायक ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम उन ज्ञात-अज्ञात शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिन्होंने आजादी से पहले और बाद में, भारत की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। उन्होंने कहा कि जब-जब दुश्मन ने भारत की अस्मिता पर चोट पहुंचाने का प्रयास किया है, तब-तब हमारे देश के जवानों ने दुश्मन को करारा जवाब देने का काम किया है। मुख्यातिथि ने कहा कि सरकार ने शहीदों के परिवारों के सम्मान और भलाई को हमेशा पहली प्राथमिकता दी है। जो जवान देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए, उनके एक आश्रित को अनुकंपा के आधार पर सरकारी नौकरी दे रही है। अक्टूबर 2014 से जून 2025 तक, 410 शहीदों के

आश्रितों को नौकरी दी गई है। मुख्यातिथि ओमप्रकाश यादव ने समारोह में उपस्थित स्वतंत्रता सेनानियों व शहीदों की वीरांगनाओं और परिजनों को सम्मानित किया और वीरता पुरस्कार व सेना मेडल धारक सैनिकों को भी सम्मानित किया। कार्यक्रम में सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों व प्रमुख समाजसेवियों को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। समारोह में विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभागियों ने पीटी व डबल शो, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, परेड व मार्च पास्ट सहित अन्य गतिविधियों का शानदार प्रदर्शन किया। इस अवसर पर डीएसपी दिनेश कुमार, तहसीलदार अजय कुमार, नगर पालिका सचिव गौरव कुमार आदि रहे।

महंत खेतानाथ राजकीय महाविद्यालय सिहमा में मनाया 79वां स्वतंत्रता दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

महंत खेतानाथ राजकीय महाविद्यालय सिहमा में मनाया 79वां स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सिहमा गांव के सरपंच सुमन देवी ने महाविद्यालय ध्वजारोहण किया। उसके बाद राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाषण व देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया। सरपंच सुमन देवी ने कहा कि जिन लोगों ने हम सबके लिए अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया, ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों ने जो सपना देश की प्रगति के लिए देखा था, उन सपनों को युवा पीढ़ी पढ़ लिखकर के संस्कारों के साथ पुरा करने का प्रयास करें। भारत गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर 15 अगस्त स- 1947 को आजाद हुआ था। तबसे लेकर आज तक हम इस दिन को



मंडी अटेली। सिहमा महाविद्यालय में ध्वजारोहण करते हुए।

स्वतंत्रता दिवस के नाम से मनाते आए हैं।

यदुवंशी डिग्री कॉलेज में मनाया स्वतंत्रता दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

यदुवंशी डिग्री कॉलेज पटौकरा में 79 वें स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। मुख्य अतिथि संस्था निदेशक सुरेश यादव के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। देश भक्ति सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ कविता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर स्वाती दूसरा स्थान पर राहुल और तीसरा स्थान दिव्या ने प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता प्रथम स्थान राहुल और प्रिया ने तथा दूसरा स्थान कृतिका और तीसरा स्थान रोहित ने प्राप्त किया। मेहेंदी प्रतियोगिता में प्रथम

यदुवंशी डिग्री कॉलेज में मनाया स्वतंत्रता दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

यदुवंशी डिग्री कॉलेज पटौकरा में 79 वें स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। मुख्य अतिथि संस्था निदेशक सुरेश यादव के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। देश भक्ति सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ कविता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर स्वाती दूसरा स्थान पर राहुल और तीसरा स्थान दिव्या ने प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता प्रथम स्थान राहुल और प्रिया ने तथा दूसरा स्थान कृतिका और तीसरा स्थान रोहित ने प्राप्त किया। मेहेंदी प्रतियोगिता में प्रथम

स्थान मुस्कान ने, दूसरा स्थान प्रियंका ने, तीसरा स्थान तान्या ने प्राप्त किया। पॉट डेकोरेशन प्रतियोगिता में पहला स्थान पर महक दूसरे स्थान पर कोमल और तीसरे स्थान पर प्रियंका रही। बले मॉडलिंग में प्रथम स्थान भारती, दूसरा स्थान मानसी ने प्राप्त किया।

गोष्ठी

नेशनल मॉडल स्कूल में गोष्ठी आयोजित

प्रचार्य ने गोष्ठी में आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया

विभाजन विभीषिका व अखंड भारत संकल्प दिवस पर छलका दर्द



महेन्द्रगढ़। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन किया। प्रोफेसर टंकेश्वर कुमार ने कहा कि आखिर बंटवारा हुआ ही क्यों? यदि बंटवारा

वाले हिंदू तो शांति से आ रहे थे, लेकिन वहां रहने वाले धर्म विशेष के लोगों ने उनके साथ अत्याचार किया। बंटवारा जून 1948 में प्रस्तावित था तो अगस्त 1947 में ही क्यों किया गया, इन सब प्रश्नों के उत्तर अभी तक अनुत्तरित हैं। हमें इनका भी उत्तर खोजना होगा। हमारा परिवार भी पाकिस्तान से विस्थापित होकर के आया था। पिता व परिवार ने जिस प्रकार के कष्ट व जलाल सहन की, भगवान वैसा किसी को भी सहन न करना पड़े। राधा कृष्ण मक्कड़ ने कहा कि हम पाकिस्तान के बहावलपुर में रहते थे। कैप्टन हंसराज ने कहा कि यह विश्व की

सबसे निंदनीय घटना थी, इसकी जितनी भर्त्सना की जाए, उतनी कम है। विश्व में यह पहली व अंतिम घटना है कि बिना किसी युद्ध के सात आठ लाख लोग मौत के घाट उतार दिए जाएं, वह भी उन परिस्थितियों में जब वे अपना सबकुछ छोड़कर शांति से भारत आ रहे थे। अध्यक्ष प्रमोद शांठी ने कहा कि हमें पाकिस्तान से विस्थापित होकर आए लोगों के साहस, बलिदान, धर्म के प्रति प्रतिबद्धता व जीवत को प्रणाम करना चाहिए। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इन्होंने अपने धर्म की रक्षा की, अनेक प्रकार के कष्ट सहन किए, लेकिन धर्म नहीं बदला।

बीजेआरडी विद्यालय में राष्ट्रीय व धार्मिक त्योहारों की रही धूम

महेन्द्रगढ़। बीजेआरडी विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस तथा जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ विद्यालय डायरेक्टर राजपाल यादव ने ध्वजारोहण करके किया।

चेयरपर्सन शीला यादव ने मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती गीत गाकर सभी का मन मोह लिया। इसके पश्चात नन्हे मुन्हे कलाकारों ने जलवा जलवा गाने पर नृत्य करके सभी को मंत्र मुक्त कर दिया। कक्षा 9वीं से 12वीं के बच्चों ने मटकी फोड़ प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

TAGORE SEC. SCHOOL
An English Medium Co-Educational Cultural School (Nursery to X)
SAINIK SCHOOL
NAVODAYA SCHOOL
MILITARY SCHOOL
DEENARAVAN
HOSTEL FACILITY
LIBRARY
ADMISSION OPEN 2025-26
BARBARA ROAD, SANKETICHA, MOTIPULLI (INDIA) Contact No: 925653272, 9341653444
TAGORE COLLEGE
Dr. B.R. Ambedkar Law University, Jaipur
D-PHARMA
Limited Seats PCM, PCB
ADMISSION OPEN
LL.M 2 Year LL.B 3 Year
For Admission: 9549210000, 8432044810



सदासुख स्कूल में मनाया स्वतंत्रता दिवस
महेन्द्रगढ़। सदासुख मेमोरियल स्कूल में स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम बड़े धूमधाम से मनाया गया, जिसमें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मोहर सिंह प्रधान आर्य समाज कनीना ने ध्वजारोहण किया। इस कार्यक्रम में बच्चों ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए। मुख्यातिथि ने बच्चों को देश के वीर जवानों की गाथाएं बताईं। चेरमैन विनय यादव ने बताया कि बच्चों ने बड़ी मेहनत करके बहुत अच्छे कार्यक्रम प्रस्तुत किए छोटे-छोटे बच्चों ने देशभक्ति गीत गाकर सबका मन मोह लिया।

लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल में मनाया स्वतंत्रता दिवस
नारनौल। सिंहमा स्थित लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल में स्वतंत्रता दिवस और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण और राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिसके बाद सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। इस दौरान हल्की-हल्की रिमझिम बारिश ने मौसम को और भी सुहावना बना दिया। जिससे समारोह का आनंद दोगुना हो गया। चेरमैन पृथ्वी सिंह, एमडी मनीष राव एवं प्रधानाचार्य ने अपने प्रेरणादायी संबोधन में छात्रों को देशभक्ति, नैतिक मूल्यों और श्रीकृष्ण के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया।

स्वतंत्रता दिवस पर विधायक ने किया ध्वजारोहण कनीना
राजकीय महाविद्यालय कनीना में आयोजित उपमंडल स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में महेन्द्रगढ़ के विधायक कंवर सिंह यादव ने ध्वजारोहण किया। जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्योछावर किए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से भारत देश दिनोंदिन उन्नति कर रहा है वहीं पहलगाम जैसे आंतवादी हमले का मुंहतोड़ जवाब भी देना जानता है।



हैप्पी स्कूल में मनाया स्वतंत्रता दिवस और जन्माष्टमी महोत्सव

महेन्द्रगढ़। हैप्पी एक्वरीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में स्वतंत्रता दिवस और जन्माष्टमी का पर्व एक साथ मध्य रूप से मनाया गया। यह दिन विद्यालय परिसर में देशभक्ति और भक्ति के अन्तर्गत का साक्षी बना। मुख्यातिथि के रूप में उपसंचालिका कोशल्या अग्रवाल, प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल, प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल और मैनेजर चंचल अग्रवाल। सभी अतिथियों व विभिन्न विंग प्रमोटरियों ने संयुक्त रूप से कर ध्वजारोहण राष्ट्रगान के साथ तिरंगे को सलामी दी। कोच नरेश तंवर की अध्यक्षता में विद्यार्थियों ने प्रभावशाली परेड निकालकर दर्शकों का मन मोह लिया। मंच संचालन की जिम्मेदारी हिंदी अध्यापक कुसुमेश शर्मा और विद्यार्थी अलका, रिया दीक्षा, रवि ने सहे हो शब्दों में निभाई। विद्यालय के छोटे-छोटे नव्वे विद्यार्थियों ने भाषण, कविताएं, देशभक्ति गीत, नृत्य और नाटक प्रस्तुत कर उपस्थित जनों की आंखें नमक कर दीं और देशप्रेम का अद्भुत संदेश दिया। संचालक सुभाष चंद्र अग्रवाल और उपसंचालिका कोशल्या अग्रवाल ने कहा कि स्वतंत्रता केवल एक अवसर नहीं, यह जिम्मेदारी है।



साध्वी बहन मिश्री देवी वृद्धाश्रम में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

आजादी का यह दिन हमें देश के विकास, प्रगति और खुशहाली के लिए अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का अवसर देता

हरिभूमि न्यूज नारनौल

जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष नरेंद्र सूरु ने कहा कि यह दिन हमें लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और संविधान के मूल्यों को याद दिलाता है। यह दिन हमें देश के विकास, प्रगति और खुशहाली के लिए अपनी

भारतीय मजदूर संघ दुनिया का सबसे बड़ा श्रमिक संगठन: मेहला

हरिभूमि न्यूज नारनौल

भारतीय मजदूर संघ का जिला महेन्द्रगढ़ का अधिवेशन सीताराम धर्मशाला में संपन्न हुआ। अधिवेशन में विशेष रूप से भारतीय मजदूर संघ हरियाणा के प्रदेश महामंत्री हवासिंह मेहला, प्रदेश मंत्री एवं भिवानी विभाग प्रमुख हवा सिंह तंवर, जिला महेन्द्रगढ़ के जिला मंत्री भंवरलाल व जिलाभर से आए विभागीय संगठनों के कर्मचारी नेताओं ने भाग लिया। प्रदेश महामंत्री हवासिंह मेहला ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ 23 जुलाई 1955 को शून्य से आरंभ होकर आज 70 वर्ष में इस देश का ही नहीं, दुनिया का सबसे बड़ा श्रमिक संगठन है। भारतीय



नारनौल। सीताराम धर्मशाला में आयोजित अधिवेशन में मौजूद अतिथिगण।

मजदूर संघ मजदूरों का मजदूरों के लिए और मजदूरों द्वारा चलाए जाने वाला श्रम संगठन है। भारतीय मजदूर संघ राष्ट्रवादी सोच रखने वाला गैर-राजनीतिक श्रम संगठन है। उन्होंने अपने संबोधन में पांच परिवर्तन में भारी प्रकाश डाला और बताया कि हमारे जीवन में इन पांच परिवर्तनों का कितना महत्व है। इन सभी पांच परिवर्तन पर अपने विचार रखते हुए। समाज में एक अलग दिशा देने का काम भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं ने करना है। अधिवेशन में आए अनुबंधित कर्मचारियों में हॉल ही में हरियाणा सरकार द्वारा प्रदान की गई सेवा सुरक्षा को लेकर खुशी की लहर थी। सभी कर्मचारियों ने मिठाई

पुरानी मंग कर नई गठित की कार्यकारिणी

अधिवेशन के अंत में भारतीय मजदूर संघ की पुरानी जिला कार्यकारिणी को भंग करके नई जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें मजदूर संघ से संबंधित त सभी संगठनों को प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए अनुबंधित विद्युत कर्मचारी संघ से आशीष गौरा को पुनः जिला अध्यक्ष, अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ से मुनी देवी व ग्रामीण टयूबवेल ऑपरेटर संघ से दीपक को उपाध्यक्ष स्वास्थ्य कर्मचारी संघ एनएचएम से हरकेश को जिला मंत्री, आईटीआई से हरीश व कंप्यूटर प्रोफेशनल संघ से दीपक को सहमंत्री, अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ से भूपेश पालीवाल को कोषाध्यक्ष बनाया गया। इसके इलावा अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ से मंजू बाला, स्वास्थ्य

कर्मचारी संघ एनएचएम से स्नेहलता व डॉ. पुष्पेन्द्र, अनुबंधित विद्युत कर्मचारी संघ से कर्मवीर जाखड़ जिला कार्यकारिणी सदस्य के तौर पर चुने गए हैं। भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश महामंत्री हवा सिंह मेहला ने नवनिर्वाचित जिला समिति को बधाई देते हुए बताया कि भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश प्रतिनिधि मंडल की 18 अगस्त को प्रदेश के मुख्यमंत्री के साथ कर्मचारियों की मांगों को लेकर मीटिंग है। उक्त मीटिंग में मुख्य सचिव के इलावा सभी विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं विभागध्य भी उपस्थित रहेंगे। उन्होंने कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि इस मीटिंग में सभी कर्मचारियों की मांगों के साथ-साथ एनएचएम कर्मचारियों की भी मांगों को पूर्ण करवाने के लिए सरकार पर दबाव बनाएंगे।

संघ के कर्मचारियों ने अपनी खुशी मिठाई बांटेकर जाहिर की। भिवानी विभाग प्रमुख हवा सिंह तंवर ने बताया कि भारतीय मजदूर संघ सभी कर्मचारियों की समस्याओं के निदान के लिए तत्पर रहता है तथा

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर सदीप यादव, विनोद राव, डॉ. जितेंद्र सिंह, डॉ. अमित शर्मा, डॉ. नितेश सिंघल, डॉ. दीपक कोशिक, सुनीता, हेमलता, रानी, गंगा बाई, रानी, अरुण जैदिया, नमिता, अनिल सेनी, चितामणि, नरेंद्र कुमार, गोपी चंद, प्रेमकुमार, राहुल, हितेश, जयवंत, कपिल मिश्र, मुकेश कुमार, हेमंत यादव, त्रिभुपाल गोटवाल, अशोक जांगड़ा, सविता यादव, नितेश बंसल, हेमन्त यादव, मधु सुदन, विक्रम सिंह, परमजीत, सतीश कुमार, मनोज कुमार, सुन्दर सिंह, बसंत कुमार, सरजीत लाल व तपन कुमार आदि उपस्थित थे।

किसी भी कर्मचारी पर अन्याय नहीं होने दिया जाएगा।

राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री विपुल गोयल ने किया ध्वजारोहण

महेन्द्रगढ़ में शहीदों को नमन कर हर्षोल्लास के साथ मनाया स्वतंत्रता दिवस समारोह

हरिभूमि न्यूज नारनौल

79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह जिला में बड़े उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आईटीआई में हुए जिला स्तरीय समारोह में हरियाणा के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री विपुल गोयल ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया। उन्होंने परेड का निरीक्षण किया और मार्च पास्ट की सलामी ली। विभिन्न विद्यालयों की टीमें ने देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इससे पहले मुख्य अतिथि ने जिला सैनिक बोर्ड में शहीद स्मारक पर पहुंचकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने मंच पर वीरगानाओं तथा स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों को भी शाल आढ़ाकर सम्मानित किया।



नारनौल। समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते विद्यार्थी। सम्मानित होने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों की सूची।

भावनाओं का प्रतीक है। यह दिन हमें उन असंख्य वीरों के बलिदान की याद दिलाता है जिन्होंने देश को आजादी दिलाई। उन्होंने उन सभी ज्ञात और अज्ञात शहीदों को भी श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने आजादी से पहले और बाद में भारत की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। मंत्री ने कहा कि जब भी दुश्मन ने भारत की अस्मिता पर हमला करने की कोशिश की है, हमारे जवानों ने मुंहतोड़ जवाब



फोटो: हरिभूमि

नार्च पास्ट में प्रयत्न रही पुलिस प्लाटून महिला

समारोह के दौरान मार्च पास्ट में प्रथम स्थान पुलिस प्लाटून महिला तथा द्वितीय स्थान पुलिस प्लाटून पुरुष और तीसरा स्थान रेड क्रॉस ब्रिगेड को मिला। इस मौके पर उपयुक्त डॉ विवेक भारती, पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ, अतिरिक्त उपयुक्त सुशील कुमार सहित अन्य गणमान्य नागरिक भी मौजूद थे।

सिंदूर को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इसके बाद 'ऑपरेशन महादेव' के तहत पहलगाम हमले में शामिल आतंकवादियों को भी खत्म कर दिया गया। संबोधन के अंत में मंत्री ने सभी से संकल्प लेने का आह्वान किया कि हम देश की गरिमा, अखंडता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अडिग रहेंगे। उन्होंने कहा कि यही संकल्प, कर्म और त्याग अमर शहीदों के प्रति हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

नांगल चौधरी में धूमधाम से मनाया स्वतंत्रता दिवस

हरिभूमि न्यूज नांगल चौधरी

गुरुग्राम मंडल आयुक्त रमेश चंद्र बिढान ने कहा कि सात मई की रात को हमारे बहादुर सुरक्षा बलों ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से पाकिस्तान की सरजमीं पर जाकर आतंकवाद के 9 ठिकानों को ध्वस्त किया। यह आतंकवाद के खिलाफ हमारा संदेश है कि भारत अब चुप नहीं बैठेगा और आतंक के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई अमल में लाएगा। श्री बिढान आज बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय नांगल चौधरी में आयोजित उप मंडल स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में मुख्यातिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे।



नांगल चौधरी। ध्वजारोहण करते गुरुग्राम मंडल आयुक्त रमेश चंद्र बिढान।

इस मौके पर एसडीएम उदय सिंह, मेजर सतीश बहिया राजकीय कॉलेज प्रिंसिपल डा. अनिल कुमार यादव, बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय प्राचार्य डॉ अनिता तंवर, बीईओ सुनीता, बीडीपीओ ईशान शर्मा, नगर पालिका सचिव ललित गोयल, भाजपा पदाधिकारी रमेश तंवर के अलावा अन्य अधिकारी व गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

महिला महाविद्यालय नारनौल से प्रोफेसर डॉ ममता शर्मा ने किया। इस मौके पर विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

सरस्वती स्कूल में निकाली जन्माष्टी पर विशाल झांकी

हरिभूमि न्यूज नांगल चौधरी

सरस्वती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में जन्माष्टमी पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति आयोजन प्राचार्य वंदना यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें संस्था के चेरमैन दयाराम यादव मुख्य रूप से मौजूद रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति में धार्मिक पर्वों की उपयोगिता से अवगत कराया। कार्यक्रम में दसवीं और बाहरवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने राधा-कृष्ण की झांकी निकाली है।



नांगल चौधरी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार करती हुई प्राचार्या वंदना यादव।

नाटक के माध्यम से युवाओं को परिवार और निजी स्वार्थों से बढ़कर राष्ट्र को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया है। इसके बाद मटको फोड़ने की रिवाज निभाई गई तथा प्रसाद वितरण कार्यक्रम संपन्न हुआ है। स्कूल के चेरमैन दयाराम यादव ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित करके प्रोत्साहित किया है। इस दौरान संस्था के एमडी अमित यादव, उप मजबूत रखने का आह्वान किया है। बाहरवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने सुभाषचंद्र बोस तथा शहीद भगत सिंह पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया। उन्होंने



महेन्द्रगढ़। सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुति देते विद्यार्थी।

बीआर स्कूल में 79वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया

हरिभूमि न्यूज महेन्द्रगढ़

बीआर विद्यालय सेहलंग में आजादी के 79वें पर्व स्वतंत्रता दिवस को बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। शुरूआत मुख्यातिथि नरेंद्र कौशिक द्वारा ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान से हुई। इसके पश्चात विद्यालय के विद्यार्थियों ने गंगांर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, देशभक्ति गीत, कविताएं, नृत्य और नाट्य मंचन द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी। विशेष

बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर दिया देशभक्ति का परिचय

आकर्षण देशभक्ति झांकी और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से जुड़ी झलकियां रहीं, जिसमें बच्चों ने अपने अभिनय से सभी का मन मोह लिया। मुख्यातिथि नरेंद्र कौशिक ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस सिर्फ एक पर्व नहीं, बल्कि यह हमें हमारे कर्तव्यों, जिम्मेदारियों और बलिदानों की याद दिलाता है।

न्यूज डायरी

तिरंगे की शान में झूम उठा बीआर ज्ञानदीप विद्यालय

महेन्द्रगढ़। देशभक्ति की अमूर्ती लहर, तिरंगे का वर्ण और विद्यार्थियों के जोश से सरोवरों बीआर ज्ञानदीप विद्यालय सुरजनावास ने इस बार स्वतंत्रता दिवस को ऐसी भव्यता से मनाया कि पूरा परिसर मानी भारत माता के जयघोष से गूंज उठा। मुख्य अतिथि के रूप में कर्नल रामपाल यादव, विशिष्ट अतिथि कैप्टन हरपाल एवं रविंद्र गांगड़ा, डॉ. अविश यादव ने समारोह की गरिमा में चार चांद लगाए। चेरमैन रूपराम यादव एवं प्रधानाचार्य रामवीर यादव ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ व स्मृति पिंड देकर स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तिरंगा फहराने और राष्ट्रिय गान के साथ हुआ। उसके बाद छात्रों ने देशभक्ति गीत, नृत्य, कविता और भाषण प्रस्तुत किए, जिनमें शहीदों के बलिदान और स्वतंत्रता की अमूल्य गाथाएं जीवंत हो उठीं। मुख्यातिथि कर्नल रामपाल यादव ने कहा कि स्वतंत्रता केवल उपहार नहीं, बल्कि हमारे वीरों के बलिदान की अमनत है। हमें इसे एकजुट रहकर संभालना होगा। विशिष्ट अतिथि कैप्टन हरपाल और रविंद्र गांगड़ा, सरपंच ओमकार ने विद्यार्थियों की प्रतिभा और अनुशासन की सराहना करते हुए कहा कि यही बच्चे भविष्य के राष्ट्र निर्माता हैं। चेरमैन रूप राम यादव ने विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम और अनुशासन को विद्यालय की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य रामवीर यादव ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों को सेवा, सत्य और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। पूर्व प्राचार्य रामावतार यादव, शुभारंभ व रामावतार तंवर आदि उपस्थित रहे।



देवयानी स्कूल में जन्माष्टमी पर्व किए सांस्कृतिक कार्यक्रम

महेन्द्रगढ़। देवयानी इंटरनेशनल स्कूल बेलत में स्वतंत्रता दिवस और जन्माष्टमी बड़ी धूमधाम से मनाया। चेरमैन सुनील कुमार, प्राचार्य बलवान सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर कार्यक्रम की शुरूआत की। बच्चों ने इंडिया फतेह नाटक और मेरा रंग दे बसंती चोला गीत पर देशभक्ति डांस प्रस्तुत किया। प्राइमरी और मिडिल कक्षा के बच्चों ने तिरंगा बनाकर देशभक्ति की भावना को उजागर किया। जन्माष्टमी पर्व को मानते हुए मिडिल कक्षा से आशीष यादव ने सुदामा, दीपेश चौधरी और रियाज यादव ने द्वारपाल, डोयल शर्मा ने राधा, केशव चोहान ने कृष्ण का रूप धारण कर नाटक प्रस्तुत किया। मनाविक, दिव्या, परीक्षित यादव ने कान्हा का रूप धारण कर मटकी फोड़ कर अपने सांस्कृतिक पर्व को मनाया। चेरमैन सुनील कुमार ने बताया कि हमारी संस्कृति में पर्व का बड़ा महत्व है।



विजय इंटरनेशनल स्कूल में मनाया स्वतंत्रता दिवस

महेन्द्रगढ़। विजय इंटरनेशनल स्कूल बलाना में 79वां स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। इस समारोह का शुभारंभ विद्यालय सचिव महेंद्र सिंह के हाथों किया गया, इसकी शुरूआत उन्होंने मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने द्वीप प्रज्जलित करके की। चेरमैन विजय यादव टुकान व उनकी पत्नी नीतू यादव ने ध्वजारोहण किया। विद्यालय के नव्वे-नव्वे बच्चों ने हरियाणवी व देश भक्ति गानों पर नृत्य, कविता, नाटक आदि प्रस्तुत करके सबका मन मोह लिया। बच्चों ने एक पेड़ मां के नाम शीर्षक पर नाटक प्रस्तुत करके पेड़ लगाओ पर्यवरण बचाओ का संदेश दिया। बच्चों ने देश रंगीला रंगीला, जलवा, मेरी देश की धरती सोना उमले आदि देश भक्ति गानों पर नृत्य प्रस्तुत किया। प्रिंसिपल नट्यू सिंह ने सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं। चेरमैन विजय यादव टुकान ने सभी बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस अवसर पर सचिव महेंद्र सिंह, वाईएस प्रिंसिपल अशोक कान्हा आदि उपस्थित रहे।



यह दिन हमें लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और संविधान के मूल्यों की दिलाता याद: जिला जज

साध्वी बहन मिश्री देवी वृद्धाश्रम में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन



नारनौल। संबोधित करते न्यायाधीश नरेंद्र सूरु।

प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का अवसर प्रदान करता है। वह शुक्रवार जिला न्यायालय की ओर से साध्वी

प्रधानमंत्री दिव्याशा केंद्र में करवा

इस दौरान अगेड कुमार ने प्रधानमंत्री दिव्याशा केंद्र की ओर से दिव्यांगजनों और वरिष्ठ नागरिकों को फ्री में मिलने वाले सहायक उपकरण के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कोई भी दिव्यांगजन और वरिष्ठ नागरिक जन जिला रेड क्रॉस कार्यालय में स्थित प्रधानमंत्री दिव्याशा केंद्र में आकर सहायक उपकरण के लिए पंजीकरण करवा सकते हैं। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री दिव्याशा केंद्र के तहत वरिष्ठ नागरिकों को निशुल्क कम्पैरि बेल्ट, निहास, कानों की मशीन, व्हीलचेयर विभिन्न प्रकार के वॉकर व अन्य साहज उपकरण उपलब्ध करवाए जाते हैं।

कर रहे थे। उन्होंने सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मेरी कामना है कि यह सुअवसर सभी देशवासियों को ही जवान में नया जोश और नई स्फूर्ति लेकर आए, जिससे विकसित भारत के निर्माण को नई गति मिले। इस मौके पर अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश केपी सिंह, मैडम हर्षली चौधरी, मैडम वर्षा जैन व नितिन राय, सिविल जज सीनियर डिवीजन जितिन गुजराला, मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी विक्रमजीत सिंह, मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं

ना करें किसी से तुलना आप स्वयं हैं अनमोल



कई लोग हमेशा दूसरों से अपनी तुलना करते रहते हैं और खुद को कमतर आंकते हैं। ऐसे लोग न जीवन में बड़ी उपलब्धियां हासिल कर पाते हैं और न ही खुश-संतुष्ट रहते हैं। अगर आप भी ऐसा सोचते हैं तो आपको अपना नजरिया बदलना होगा। ऐसा कैसे कर सकते हैं, जानिए।

को प्राप्त और विकसित करके हम स्वयं को सुखी बना सकते हैं।

जीवन के अंग अच्छा-बुरा

हमारे व्यक्तित्व और जीवन में अच्छाई के साथ-साथ बुराई भी मौजूद होती है। किंतु हमें उन बुराइयों को पहचान कर उन पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन को संवरने के लिए हमें मूर्तिकार की तरह काम करना पड़ता है, जो अपनी मूर्ति बनाने के लिए पत्थर को काटता है, अनुपयोगी या अतिरिक्त पत्थर को छांटकर, छीलकर, राड़ कर, घिसकर उसे एक सुंदर आकार देता है। हम चाहे जितनी कितानें पढ़ लें और चाहे जितने ज्ञानी हो जाएं, लेकिन यह ज्ञान अगर हमारे जीवन में नहीं उतरता है, उसे प्रभावित, निर्देशित या निर्धारित नहीं करता है तो यह सब बेकार है।



अतीत जैसा है आज का दौर

तुलना चाहे जैसी भी क्यों ना हो, व्यर्थ और निरर्थक ही होती है। चाहे वह व्यक्ति के संबंध में हो या समय और परिस्थिति के संबंध में हो। कुछ लोगों को अक्सर यही सोचकर दुखी और परेशान होते देखा जा सकता है कि पुराना जमाना बहुत अच्छा था। उनका मानना रहता है कि उस समय के लोग और परिस्थितियां अच्छी थीं, तब चीजें सरती होती थीं, लोग मिलनसार और सहयोगी थे, लूटपाट, चोरी और डकैती नहीं होती थी। यह एक गलतफहमी है कि दुनिया कभी बहुत अच्छी थी। जिस समय के लिए आप यह सब सोचते हैं, उस समय के लोग भी यही सब सोचते थे कि उनसे पहले की दुनिया अच्छी होती थी। आप किसी भी युग का इतिहास या साहित्य पढ़ लीजिए, उस समय के अत्याचारी राजा महाराजा, बादशाह, सेठ साहूकारों के लूट और शोषण के किस्से, गरीबी का आलम और महंगाई की दास्तान पढ़ने को मिल जाएगी। लुटेरें, धोखेबाज, अपराधी, लालची मित्र, कंजूस मालिक और ईर्ष्यालु रिश्तेदार या पड़ोसी हर जमाने में रहे हैं। भगवान राम का जमाना हो या श्री कृष्ण का, हरिश्चंद्र का जमाना हो या मुगल बादशाह अकबर या फिर ब्रिटिश काल, हर युग में खलनायक हुए हैं। हमारा मन ही कुछ ऐसा है, जो हमेशा बीते हुए काल में या दूसरों में परफेक्शन और सुख ढूंढता है। दुनिया में हर समय मुट्ठी भर लोग ही बहुत अच्छे और मुट्ठी भर लोग ही बहुत बुरे हुए हैं। बाकी के लोग तो हमारी और आपकी तरह सामान्य इंसान रहे हैं। इन दुश्चिंतकों, उलझनों और बेचैनी से बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है, तुलना न करके अपने मन-जीवन का ध्यान खुद रखना।

भावनाओं पर नियंत्रण जरूरी

कई बार आप अचानक इधर-उधर की बातों सोचकर, किसी की सफलता, समृद्धि या सुख को देखकर विचलित या दुखी हो जाते होंगे। स्वयं को कोसते हुए एक अनजान अपराधबोध से घिर जाते होंगे। ऐसी स्थिति से बचने के लिए अपनी भावनाओं पर बारीकी से नजर रखिए। आपकी विवेकशीलता ही इस भावनात्मक प्रभाव को रोक सकती है। यह क्षमता आपको स्वयं हासिल करनी होती है। जब आप दुखी करने वाली भावनाओं को पहचानना सीख लेते हैं तो खुश होने के



असर बढ़ने लगते हैं। आप तनाव और गुस्से में हों तो सोचिए कि इसकी मूल वजह क्या है? इसके पीछे कौन-सी चीज, व्यक्ति या स्थिति है? फिर यह विचार कीजिए कि वह क्या चीज है, जो आपको दूसरों से अलग बनाती है? यह ताकत आपको अनावश्यक गुस्से से बचाएगी और कोई वाजिब कारण है तो उसे दूर करने का मौका देगी।

करते रहें आत्मविश्लेषण

इस बात से ज्यादा फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि लोग आपको कितने खिलाफ हैं या कितने लोग आपके समर्थन में हैं? आपको अपने आपको दृढ़ रखते हुए सही दिशा में कार्य करना होगा। आपको स्वयं से पूछना होगा कि मैं क्या हासिल करना चाहता हूँ और उसके लिए क्या कर रहा हूँ? जो कर रहा हूँ, उसमें क्या सुधार है, जिन्हें दूर करना है? बस फिर आपको सभी बाहरी चिंताओं से छुटकारा मिल जाएगा।

कवर स्टोरी

शिखर चंद जैन

कई लोग यह सोचकर हमेशा परेशान और दुखी रहते हैं कि वे दुनिया से पिछड़ गए। ऐसा अक्सर वही लोग करते हैं, जिन्हें यह आभास नहीं कि हम ईश्वर की अनमोल कृति हैं। प्रकृति ने हमें अतुलनीय गुण दिए हैं। दुनिया का कोई भी सजीव दूसरे सजीव से हबहू मेल नहीं खा सकता।

तुलना है निरर्थक

इस बात को समझ लेना जरूरी है कि आप इस ब्रह्मांड में अपने जैसे अकेले ही हैं। इसलिए दूसरों से तुलना करना या उनके जैसा बनने की कोशिश करना व्यर्थ की मशक्कत है। इसमें अपना समय, श्रम, धन और ऊर्जा का अपव्यय करने की बजाय स्वयं को निरंतर निखारने के जतन करें। आम का स्वाद या आकार केले जैसा हो या अमरूद का स्वाद संतर जैसा हो तो क्या आप इसे कभी सच्चे मन से स्वीकार कर पाएंगे? आप करेले को उसकी कड़वाहट के साथ उसके गुणों के कारण ही तो स्वीकार करते हैं।

एक तरह का क्रम है परफेक्शन

परफेक्शन यानी संपूर्णता एक ऐसी भावना है, जो हमें निरंतर परेशान करती है। लेकिन इसे कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि जिस पल आप स्वयं को किसी भी मायने में पूर्ण करते हैं, वह अगले ही पल बदली हुई परिस्थितियों और समय के कारण अपूर्ण या पुरानतन हो जाता है। संसार में बुराई, दुख और अपूर्णता अपरिहार्य हैं। दुख ऐसी भावना है, जो हर व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी रूप में अनुभव होती ही है। अपूर्णता जीवन की मूलभूत सच्चाई है, जो हमें सिखाती है कि कुछ भी पूर्ण नहीं होता। बुराई और कमियां इस संसार में अंतर्निहित हैं। लेकिन धार्मिकता, पवित्रता और सरलता जैसे गुणों को विकसित करके उच्च अवस्था प्राप्त की जा सकती है। इस प्रक्रिया में अच्छे गुणों



कविता

विक्रम सिंह

मछलियां और हम

मछलियां जमीं पर नहीं लेती सांस और हम, नम के नीचे घुटने को अभिशाप हैं। जंगलों की लाश पर उठते हैं हमारे मरुत, रर ईट में कैद है, एक सूखी सांस। एक वक्त आएगा... जब हवाएं भी पराई लेंगी, और हम मछलियों की तरह, अपनी ही धरती पर मुरझा जाएंगे।

खंग्य / यशोधरा भटनागर

साफ-सफाई के दौरान कुछ पुराने बर्तनों में पीतल का लोटा हाथ आ गया। मैंने उसे नीचे रखा तो यहाँ-वहाँ लुढ़कने लगा। उसे तो अपनी बनावट के कारण लुढ़कने ही था, लेकिन हमें हिंदी की कक्षा में पढ़ाया गया मुहावरा जरूर याद दिला गया, 'बिन पेंदी का लोटा'।
याद आया स्कूल में तो यह भी दूसरे मुहावरे जैसे ही रट लिया था जैसे 'गले का हार होना' या 'चिकना घड़ा होना', परंतु आज हमारे अंदर बैठे लेखक नामक जीव ने गुढ़ाधर्म में गोते लगाने के लिए मजबूर कर दिया।
डुबकियां लगाते-लगाते ज्ञान प्राप्त हुआ कि आज के समय में बिन पेंदी का लोटा कोई मुहावरा नहीं, बल्कि खरपतवार की तरह फलती-फूलती एक प्रजाति है, जो राजनीति में, टीवी डिबेट में, व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी में और मोहल्ले की चौपाल से लेकर सोशल मीडिया की टाइमलाइन तक हर जगह मौजूद है।
पहले यह गुण नेताओं ने अपनाया। कहा जाता 'वो नेता बिन पेंदी का लोटा है, कब किस दल में चला जाए, कहा नहीं जा सकता।'
गौर कीजिए एक नेता का वार्तालाप- 'मैं नैतिकता के आधार पर पार्टी छोड़ रहा हूँ।'
'क्यों नेता जी?'
'इस पार्टी में नैतिकता बची ही कहा है भैया, इसीलिए।'
'तो किस पार्टी में जाओगे?'
'जहाँ मंत्री पद मिलेगा, वहीं नैतिकता भी मिल जाएगी।'
नेता अगर पत्ता भी तोड़ता है, तो पहले हवा का रुख देखता है। गिरेगा तो उसी दिशा में, जहाँ टूटिंग हो। कल तक जो पार्टी उनकी निगाहों में 'गुलाम मानसिकता' की थी, आज वहाँ जाकर बोलते हैं, 'मैं राष्ट्रसेवा के लिए आया हूँ।'
आजकल नैतिकता के जी.पी.एस. विहीन लोटों की कमी नहीं है। अब ये लोटे केवल राजनीति में ही नहीं, सोशल मीडिया पर भी हैं। ये लोटे अब केवल पानी नहीं ढोते, ये व्यूज, लाइक्स और ब्रांड डीलस भी ढोते हैं। ये बिन पेंदी के लोटे डूबते-उतरते रीलों की लहर पर खूब बह रहे हैं।
एक गुरुजी ने पहले कहा, 'हम नई पीढ़ी को आलोचनात्मक चिंतन सिखाएंगे।'

आज के युग में बिन पेंदी का लोटा होना कोई दोष नहीं, बल्कि गुण बन गया है। स्थिर रहो तो मूर्ख कहे जाते हो, पलट जाओ तो चतुर और बार-बार पलटो तो स्मार्ट। अब विचार नहीं बदलते, सिर्फ हेरिस्टैग बदलते हैं। 'बिन पेंदी का लोटा' होना अब रणनीति है।

लुढ़कते लोटे



पेंदी का लोटा नहीं होना चाहिए। बर्तन बड़ा या छोटा हो पर पेंदी वाला हो। लेकिन आजकल हर कोई सोचता है, 'अगर लोटा बनेंगे, तो बहाव वहीं है, जहाँ पावर है।'
अगर महाभारत आज लिखा जाता, तो शकुनि अपने भांजे दुर्योधन से कहता, 'मैं पांडवों का स्थायी दुश्मन नहीं हूँ, राजनीतिक परिस्थितियां बदल रही हैं। फिलहाल सोशल मीडिया पर पांचों पांडव ज्यादा ट्रेंड कर रहे हैं, तो मैं भी उनकी तरफ चला जाता हूँ।'
आज के युग में बिन पेंदी का लोटा होना कोई दोष नहीं, बल्कि गुण बन गया है। स्थिर रहो तो मूर्ख कहे जाते हो, पलट जाओ तो चतुर और बार-बार पलटो तो स्मार्ट। अब विचार नहीं बदलते, सिर्फ हेरिस्टैग बदलते हैं।
'बिन पेंदी का लोटा' होना अब रणनीति है। सिर्फ एक चीज स्थिर है और वो है अस्थिरता! *



नेचर है पावरफुल मेंटल हीलर

यह सच है कि आज की आधुनिक जीवनशैली में लोग तकनीक के जाल में उलझकर, नेचर से दूर होते जा रहे हैं। इसी वजह से लोग मेंटल प्रॉब्लम्स की गिरफ्त में आ रहे हैं। इनसे मुक्ति पाने के लिए हमें नेचर के करीब जाना होगा।

लाइफस्टाइल

बुधरा फातमा

आस-पास फैली हरियाली, नदी, समंदर, झरने न सिर्फ देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि वे हमारे मन को हील करने में भी मददगार साबित होते हैं। आज दुनिया जिस सोशल मीडिया के जाल में फंसी जा रही है, उस वजह से हर दूसरा इंसान अकेलेपन से जूझ रहा है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि एक तरफ टेक्नोलॉजी हमें चांद तक पहुंचा रही है, दूसरी तरफ हमारे पास एक अदद कोई अपना नहीं, जिससे हम अपने मन की बात कह सकें। आभासी दुनिया में भले ही टेरों फ्रेंड्स हों लेकिन वास्तव में कोई ऐसा दोस्त नहीं मिलता, जिसे

को बेहतर बनाना है तो प्रकृति के करीब जाना बहुत जरूरी है। खासतौर पर वर्कलेस का स्ट्रेस युवाओं को डिप्रेसन की तरफ ले जा रहा है। यही वजह है कि आजकल बहुत से लोग अच्छी-खासी जाँब छोड़ कर किसी पहाड़ी या समंदर के किनारे वाली जगह शिफ्ट हो रहे हैं। वास्तव में नेचर में एक हीलिंग पावर होती है। इसलिए बेहतर मेंटल हेल्थ के लिए नेचर से कनेक्टेड रहना बहुत जरूरी है। नेचर हमें फ्रेश, एनर्जेटिक और मेंटली हेल्दी बनाती है।

मिलता है सुकून-शांति

जीवन की भाग-दौड़ में अगर कोई चीज हम से छिन गई है तो वो है हमारा सुकून। प्रकृति के पास जाकर थोड़ा समय बिताने से हमें खुद को जानने-समझने का मौका मिलता है। वरना मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया के युग में हम खुद के अस्तित्व को भूलते जा रहे हैं। प्रकृति हमारा मन शांत करती है और हम जीवन को नए नजरिए से देख पाते हैं।

गार्डनिंग से मिलती है तनाव से मुक्ति

अगर आपके पास समय का अभाव है तो नेचर के करीब जाने की शुरुआत अपने घर के गार्डन से कीजिए। नए-नए फूलों वाले पौधे लगाइए। किचन के लिए कुछ हर्ब्स उगाइए। ये छोटी-छोटी आदतें हमें तनाव से बचाने में मदद करती हैं। भले ही ये शौकिया हों लेकिन इतनी देर आप प्रकृति से जुड़े रहेंगे, जो बिना किसी दवा और डॉक्टर के आपके स्ट्रेस को कम कर देगा।



हम अपना कह सकें। देश-दुनिया में डिप्रेसन के मामले और इसकी वजह से आत्महत्याएं इतनी ज्यादा बढ़ती जा रही हैं कि हेल्थ एक्सपर्ट्स डिप्रेसन को एक महामारी मानने लगे हैं।

नेचर की ओर करें रुख

हेल्थ और फिटनेस कंसल्टेशन के लिए डब्ल्यूआईबीए अवाइड विनर प्रमिला ओल्सन मुंबई की सेटलड लाइफ छोड़कर नीलगिरि की पहाड़ियों में आशियाना बनाकर रहने लगीं। दरअसल, शोर-शराबा, दौड़-भाग और तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता से एक तरह का मानसिक दबाव महसूस होने लगता है, जिसकी वजह से प्रमिला को लगा कि अगर जिंदगी को बेहतर बनाना है तो प्रकृति के करीब रहना बहुत जरूरी है। लेकिन अब हर इंसान इतना बड़ा निरुत तो नहीं ले सकता कि वो एक सेटलड लाइफस्टाइल को बदल ले, इसलिए अगर आपके आस-पास एक पार्क भी है तो दिन का थोड़ा वक्त वहाँ जरूर बिताइए। प्रमिला बताती हैं कि आजकल के डिजिटलाइजेशन के युग में लोग बहुत अकेले हो गए हैं और उन्हें कोई एक चीज बचा सकती है तो वो है प्रकृति।

मेंटल हेल्थ के लिए जरूरी

आज के दौर में लोगों पर बढ़ता वर्कलोड और बढ़ता तनाव, इस बात का इशारा कर रहा है कि अगर जीवन

नेचर के करीब करें वर्कआउट

जिम जाकर ट्रेडमिल पर भागने से अच्छा है, वर्कआउट के लिए किसी खुले और पेड़-पौधों से घिरे जगह का चुनाव करें। कानों में हेडफोन लगा कर



दौड़ना भले ही फैशन हो लेकिन अगर आप रनिंग या जॉगिंग कर रहे हैं तो प्रकृति को सुनने का प्रयास कीजिए। ये हमें मानसिक रिलेक्सेशन देता है। आज हम सब जिस तरह के आक्रामक और अशांत मानसिकता के बमते जा रहे हैं, वहाँ सिर्फ प्रकृति के पास ही वो पावर है, जो हमें शांत-चित्त रख सकती है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

उद्भ्रांत का बहुविध रचनाकर्म

करीब डेढ़ सौ पुस्तकों के रचनाकार उद्भ्रांत का रचना संसार बहुत विस्तृत है। उनके रचनाकर्म के विभिन्न आयामों पर अनेक आलोचकों के द्वारा लिखे गए लेखों की पुस्तक 'उद्भ्रांत का रचनाकर्म' कुछ समय पूर्व कैलाश बाजपेयी के संपादन में प्रकाशित होकर आई है। इसके पहले खंड में 19 आलोचनात्मक लेख हैं, जबकि दूसरे खंड में हरभजन सिंह मेहरोत्रा द्वारा उद्भ्रांत पर लिखा गया संस्मरण और शहंशाह आलम द्वारा लिया गया उद्भ्रांत का साक्षात्कार भी संकलित है। उद्भ्रांत की प्रसिद्ध रचना 'रुद्रावतार' पर डॉक्टर आनंद सिंह लिखते हैं, 'उद्भ्रांत की विशेषता यह मानी जानी चाहिए कि उन्होंने आधुनिक कविता के गद्याभासी समकालीन समय में मिथकाभासी छंदस कविता रचकर संश्लिष्ट सर्जनाशक्ति का परिचय दिया है, जो आजकल विलुप्त हो गई प्रवृत्ति है।' शहंशाह आलम के द्वारा पूछे गए एक सवाल पर उद्भ्रांत का यह कथन उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता को प्रकट करता है, 'हर कवि अपनी कविता का मुहावरा स्वयं खोजता है।' कह सकते हैं कि यह किताब उद्भ्रांत के रचनाकर्म को समझने का रास्ता मुहैया कराती है। *

पुस्तक: उद्भ्रांत का रचनाकर्म (आलोचना), संपादक: कैलाश बाजपेयी, मूल्य: 245 रुपए, प्रकाशक: नमन प्रकाशन, नई दिल्ली





सांस्कृतिक उत्सव / धीरज बसाक

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य मिजोरम में हर्षोल्लास से मनाया जाने वाला मिम कुट उत्सव, यहां की आत्मा में बसा पर्व है। यह पर्व मिजोरमवासियों को पूर्वजों की स्मृति के उल्लास से सामूहिक रूप में जोड़ता है। इस उत्सव में वे न केवल प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करते हैं बल्कि अपनी सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक गरिमा और मानवीय संबंधों की जीवंतता का भी उल्लास मनाते हैं। यह पर्व हमें संदेश देता है कि जब पूरा समाज मिलकर पूर्वजों की याद में हंसता, गाता है, तो ऐसा समाज अतीत को उत्सव के रूप में मनाता है।

सांस्कृतिक आत्मा में बसा उत्सव: वास्तव में भारत के पूर्वी राज्य मिजोरम की सांस्कृतिक आत्मा में यहां का मिम कुट उत्सव रचा-बसा है। मिम कुट उत्सव कहने को तो एक फसल पर्व है, लेकिन इसमें जीवन के उल्लासपूर्ण दर्शन का पूरा आख्यान छिपा है। वास्तव में मिजो भाषा में मिम का मतलब होता है मकई यानी मक्का और कुट का मतलब होता है त्योहार, यानी मिम कुट उत्सव प्रत्यक्ष रूप में मकई की बेहतरीन फसल को उत्सव है। यह उत्सव मकई की भरपूर फसल होने के खुशी में मनाया जाता है। लेकिन मकई तो कृषि जीवन का एक प्रतीक भर है। यह वास्तव में परिवार के पूर्वजों की स्मृति का उत्सव और स्मृति के शोक को उल्लास में बदलने का ढंग है।

उल्लास से करते हैं पूर्वजों को याद : मिम कुट उत्सव में परिवार के उन सभी बुजुर्गों/पूर्वजों को याद किया जाता है, जिनका उस साल या अतीत में निधन हुआ है। लेकिन यह दिवंगत बुजुर्गों को शोक संतप्त ढंग से याद करने का उत्सव नहीं है बल्कि ढोल की धाम में पूर्वजों की स्मृति को साझा करने का पर्व है। यह पर्व बहुत ही आनंद और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

कैसे मनाया जाता है उत्सव: यह पर्व पारंपरिक लेकिन उत्साहपूर्ण ढंग से मनाया जाता है, जिसमें पहले पक चुकी मक्का की बालियों को भूनकर गांव भर के पूर्वजों और देवी देवताओं की आत्माओं को समर्पित किया जाता है। इसके बाद गांव भर के लोग सामूहिक रूप से एकत्रित होते हैं। परंपरागत वेशभूषा में पुरुष और महिलाएं मिलकर चराओ नृत्य करते हैं। यह नृत्य स्थानीय ढोल, गींग और बांगुरी के साझा संगीत में संपन्न होते हैं। इस समारोह में पारंपरिक भोज और पेय की विशेष व्यवस्था होती है। खास करके 'जू' नाम की चावल से बना एक विशेष पारंपरिक पेय, इस भोज और उत्सव की खास पहचान होती है। यह पेय पुरे गांव के लोगों के बीच सामूहिक रूप से बांटा जाता है। इस पेय के साथ खाए जाने वाले तरह-तरह के पकवान भी पुरे गांव के लोग मिलकर बनाते हैं या इनकी व्यवस्था करते हैं।

बहुत अनोखा-सांस्कृतिक पर्व मिजोरम का मिम कुट उत्सव

भारत के उत्तरपूर्वी राज्य मिजोरम में मनाया जाने वाला मिम कुट उत्सव जैसे तो फसल कटाई का उत्सव है, लेकिन इस उत्सव में लोग अपने समुदाय के दिवंगत हुए लोगों को भी याद करते हैं। अनोखे और उल्लासपूर्ण ढंग से मनाए जाने वाले मिम कुट उत्सव के बारे में जानिए।



इस बार कब मनाया जाएगा उत्सव

मिम कुट उत्सव हर साल अगस्त माह के अंत या सितंबर के पहले सप्ताह में मनाया जाता है। स्थानीय आनंदताओं के मुताबिक इस साल 1 से 3 सितंबर 2025 के बीच यह उत्सव मनाया जाएगा। गौरतलब है कि मिजोरम में स्थानीय चंद्र पंचांग का चलन है, जो कि फसल की स्थिति और सामूहिक उत्सव पर निर्भर होता है। इसलिए अंग्रेजी कैलेंडर की तारीखों से यह आगे पीछे भी हो सकता है।

जब पूरे गांव के सभी बड़े, बुजुर्ग और बच्चे खाने-पीने और संगीत की मस्ती में डूब रहे होते हैं, तब युवा लोग अपनी तीरंदाजी और दूसरे खेल कौशल, कुश्ती का प्रदर्शन करते हैं। **सामूहिकता में सामाजिकता की झलक:** मिम कुट उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सामूहिकता है। इसमें किसी जाति, वर्ग, उम्र, लिंग के लोगों का कोई भेद नहीं रहता। सब लोग एक साथ मिलकर यह उत्सव मनाते हैं। इससे सामूहिकता मजबूत होती है और सामाजिकता को भरपूर सम्मान मिलता है। इस उत्सव में जो भी लोग अपने-अपने घरों से लाते हैं, वह सामूहिक रूप से एक जगह इकट्ठा कर लिया जाता है। फिर इन तमाम चीजों का लोग मिलकर भरपूर आनंद लेते हैं। कोई नहीं जानता कि वह किसकी क्या चीज का आनंद ले रहा है। इसके

साथ ही गांव के सभी लोग मिल कर नृत्य करते हैं। मिलकर भोजन तैयार करते हैं और मिलकर इस सबका आनंद लेते हैं।

पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र: मिजोरम का मिम कुट उत्सव केवल एक पारंपरिक पर्व भर नहीं है बल्कि यह एक ऐसा सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है, जो पर्यटकों और संस्कृति प्रेमियों को खूब आकर्षित करता है। देश-विदेश से आए पर्यटक मिजो संस्कृति, खान-पान, वेशभूषा और पारंपरिक जीवनशैली से परिचित होते हैं। इस पर्व के दौरान पर्यटकों के पास स्थानीय लोगों की हस्तशिल्प और दस्तकारी की कई अद्भुत चीजों को नजदीक से देखने और खरीदने का मौका मिलता है। पर्यटक स्थानीय लोगों के साथ मिलकर उनकी ही जैसी पोशाक पहनकर, उनके ही जैसे लोकनृत्य करने की कोशिश करते हैं और इसका भरपूर आनंद लेते हैं। इस उत्सव में भाग लेने से पर्यटकों को प्रामाणिक जनजातीय अनुभव होते हैं। मिजोरम टूरिज्म विभाग अब इस उत्सव को अपने अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन कैलेंडर में भी प्रमोट कर रहा है।

ग्लोबलाइजेशन के दौर में मिम कुट महोत्सव: ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में दुनियाभर की संस्कृतियां एक-दूसरे से मेलजोल कर रही हैं, एक-दूसरे को जान-पहचान रही हैं। ऐसे समय में मिजो संस्कृति अपनी उदारता और खुलेपन के कारण दुनिया भर को आकर्षित कर रही है। मिम कुट उत्सव बताता है कि अगर आपके अंदर अपनी संस्कृति, अपनी पहचान धुड़कती है, तो वैश्वीकरण की धुंध आपको प्रभावित नहीं कर सकती। आपकी अपनी चमक और धमक दोनों ही बनी रहती हैं। मिम कुट उत्सव जैसे पर्व इस वैश्विक समाज में अपनी शानदार सांस्कृतिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। मिम कुट उत्सव जहां एक ओर स्थानीय मिजोवासियों को दुनिया के साथ मेल-जोल बढ़ाने का मौका देता है, वहीं दूसरी ओर यह उत्सव दुनिया के लिए मिजो संस्कृति की खिड़की खोलता है। *

पहली जॉब के लिए जरूरी हैं ये तैयारियां

अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद हर यंगस्टर अच्छी जॉब चाहता है, ताकि उसका करियर ब्राइट बन सके। लेकिन इसके लिए आपको कुछ तैयारियां जरूर करनी चाहिए और खुद में कुछ स्किल्स भी डेवलप करनी चाहिए। इनके बारे में जानिए।

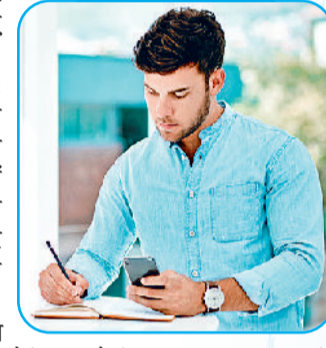
सेल्फ इंप्रूवमेंट
शिखर चंद जैन

पहली जॉब शुरू करना किसी भी युवा के लिए एक यादगार और महत्वपूर्ण कदम होता है। यह न केवल एक नई जिम्मेदारी का प्रतीक है, बल्कि यह एक ऐसा अवसर भी है, जिसका सही उपयोग करके आप पेशेवर दुनिया में अपनी पहचान बना सकते हैं और आगे चलकर अपने करियर को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में सफलता पाने के लिए कुछ आदतों और तैयारियों की आवश्यकता होती है। इन तैयारियों और आदतों को अपनाकर आप न केवल जल्दी और अच्छा जॉब पा सकते हैं, बल्कि अपने करियर की मजबूत शुरुआत भी कर सकते हैं।



प्रोफेशनल रिज्यूमे-कवर लेटर: एक संक्षिप्त, आकर्षक और जॉब के लिए अनुकूलित रिज्यूमे बनाएं। अपनी उपलब्धियों को हाइलाइट करें। प्रत्येक जॉब आवेदन के लिए कवर लेटर को कस्टमाइज करें, जिसमें कंपनी और रोल के प्रति आपका उत्साह दिखे। रिज्यूमे में ऐसे कीवर्ड्स का उपयोग करें जो जॉब डिस्क्रिप्शन से मेल खाते हैं। इंटरव्यू की समुचित तैयारी करें। सामान्य इंटरव्यू सवालों की प्रैक्टिस करें। कंपनी और जॉब रोल के बारे में रिसर्च करें। मॉक इंटरव्यू के लिए दोस्तों या मेंटर्स की मदद लें।

अनुशासन-समय प्रबंधन: कॉरपोरेट जगत में समय का सही प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है। समय पर काम पूरा करना, मीटिंग्स में समय पर पहुंचना और डेडलाइंस का पालन करना आपके पेशेवर दृष्टिकोण को दर्शाता है। पहली जॉब में प्रवेश करने से पहले, अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करें। एक डायरी या डिजिटल टूल जैसे गूगल कैलेंडर का उपयोग करें, ताकि आप अपने कार्यों को प्राथमिकता दे सकें। एक रूटीन बनाएं, जिसमें जॉब सच, स्किल डेवलपमेंट और नेटवर्किंग के लिए समय हो। हर हफ्ते 10-15 जॉब एप्लीकेशंस भेजने का लक्ष्य रखें। सुबह जल्दी उठने की आदत डालें, ताकि आप दिन की शुरुआत तरोताजा और ऊर्जावान तरीके से कर सकें। समय प्रबंधन की यह आदत न केवल आपके काम की गुणवत्ता को बढ़ाएगी, बल्कि आपके सहकर्मियों और बॉस पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी।



साथ विचार-विमर्श करना हो, स्पष्ट और संक्षिप्त बातचीत आपके विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। पहली जॉब के लिए, अपने लिखित और मौखिक कम्युनिकेशन को निखारें। औपचारिक ई-मेल लिखने का अभ्यास करें, अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ कहने की कला सीखें और सक्रिय श्रोता बनें। यदि आपको अंग्रेजी या अन्य संवाद भाषा में कमी है, तो उसे सुधारने के लिए ऑनलाइन कोर्स या प्रैक्टिस सेशन में शामिल हों।

प्रोफेशनल एटीट्यूड: यह स्किल आपके करियर की नींव मजबूत बनाता है। जॉब ज्वाइन करने से पहले, कार्यस्थल के ड्रेस कोड, व्यवहार और संस्कृति को समझने की कोशिश करें। हमेशा पॉजिटिव और प्रॉब्लम सोल्विंग अप्रोच अपनाएं। यदि आपसे कोई गलती होती है, तो उसे स्वीकार करें और उससे सीखें। यह आपके सहकर्मियों और बॉस के बीच आपकी विश्वसनीयता को बढ़ाएगा।

तकनीकी कौशल जरूरी: आज के डिजिटल युग में, तकनीकी कौशल कॉरपोरेट सेक्टर में सफलता के लिए अनिवार्य हैं। अपनी जॉब प्रोफाइल के अनुसार जरूरी सॉफ्टवेयर और टूल्स सीखें। अपनी फील्ड से संबंधित तकनीकी और सॉफ्ट स्किल्स (जैसे कम्युनिकेशन, टाइम मैनेजमेंट, टीमवर्क) सीखें। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (जैसे कोर्स, एरा, उडेमी, लिंकडइन लर्निंग) से सर्टिफिकेशन कोर्स करें। प्रोग्रामिंग, डेटा एनालिसिस, डिजिटल मार्केटिंग जैसे ट्रेडिंग स्किल्स पर फोकस करें, अगर वे आपके क्षेत्र से मेल खाते हों।

आत्मविश्वास-पहल: पहली जॉब में आत्मविश्वास और पहल करने की क्षमता आपको जल्दी सफलता दिला सकती है। अपने विचारों को साझा करने से न डरें और नई जिम्मेदारियों लेने के लिए तैयार रहें। उदाहरण के लिए यदि किसी प्रोजेक्ट में सुधार की गुंजाइश है, तो सुझाव देने में संकोच न करें। हां, आत्मविश्वास और अहंकार के बीच संतुलन बनाए रखें। *

विशिष्ट पेड़
वीना गौतम

भारत में सड़कों के किनारे यूं तो पारंपरिक रूप से नीम, इमली, पीपल, बरगद, गुलमोहर, अशोक, कचनार आदि के पेड़ लगे देखे जाते हैं। लेकिन हाल के सालों में सड़कों के किनारे, शहर की पॉश कालोनियों, बड़े पार्कों और कई दूसरी जगहों पर एक चौड़ी लाल, पीली और नारंगी पत्तियों वाला पेड़ भी लगाया जाना शुरू हुआ है, जो जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और पूर्वोत्तर के अलग-अलग इलाकों में खासतौर पर देखा जाता है। इसे हिमालयन मेपल या एप्सर ओब्लोणगम या कश्मीर मेपल या पेटेड मेपल या ओक भी कहते हैं। सरल शब्दों में यह मेपल का पेड़ है, जिसका मूल निवास यूं तो उत्तरी अमेरिका, यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, चीन और एशिया के कुछ देशों में है, लेकिन 132 प्रजातियों वाले सैपिंगेसी परिवार के इस मेपल के पेड़ की कुछ प्रजातियां भारत में भी पाई जाती हैं।

मेपल कनाडा का राष्ट्रीय वृक्ष है, कनाडा के झंडे और राज्य चिन्ह में भी मेपल की पत्तियां देखी जा सकती हैं। मेपल का पेड़ अनुकूल परिस्थितियों में कई सौ सालों तक मजबूती से खड़ा रहता है। मेपल का पेड़ ताकत और

देसी आबोहवा का विदेशी पेड़ हिमालयन मेपल



सहनशीलता का प्रतीक माना जाता है। सर्दियों में मेपल के पेड़ से एक-एक करके उसकी रंग-बिरंगी सारी पत्तियां झड़ जाती हैं और पेड़ के नीचे चौड़ी और रंगीन पत्तियों का ढेर लगा जाता है। पहले यह भारत में सिर्फ हिमालयी क्षेत्र में ही देखता था, लेकिन अब देश के बड़े शहरों के सौंदर्यीकरण के चलते यह इन शहरों के खूबसूरत पार्कों, पॉश कालोनियों और चौड़ी सड़कों के किनारे भी देखा जाता है।

कई रूपों में उपयोगी: भारत में ज्यादातर पाए जाने वाले हिमालयन मेपल के बड़े फायदे हैं। इसकी लकड़ी, फर्नीचर और निर्माण के कार्य में बहुत उपयोगी साबित होती है। इसकी छाल और पत्तियों का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में किया जाता है। कई मधुमक्खी प्रजातियों को यह बहुत आकर्षित करता है, इसलिए यह शहद उत्पादन में बहुत सहायक होता है, क्योंकि इसकी लाल, पीली पत्तियां इसे बेहद आकर्षक और शानदार पेड़ का दर्जा दिलाती हैं, इसलिए विशेष तौर पर कश्मीर में इसे पार्कों के किनारे बड़े करीने से लगाया जाता है। जापानी मेपल जैसी कुछ प्रजातियों की भी अच्छी कीमत मिलती है। खूबसूरत पर्यटन स्थलों में यह जगहों की शोभा बढ़ाने और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भी लगाया जाता है। *

रूजफुल डिवाइस
संध्या सिंह

आज के डिजिटल युग में सीसीटीवी कैमरा महज एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि एक ऐसी 'तीसरी आंख' बन चुका है, जो हर पल, हर कोने में नजर रखता है- चाहे कोई जानता हो या न जानता हो। यह कैमरा न बोलता है, न टोकता है, लेकिन उसकी नजरें चुपचाप सब कुछ देखती और रिकॉर्ड करती हैं।

सब कुछ देखता चुपचाप: बाजार, स्कूल, दफ्तर, रेलवे स्टेशन, गलियां-हर जगह ये 'तीसरी आंख' मौजूद है। यह न केवल अपराधों को रोकने में मदद करती है, बल्कि न्याय दिलाने में भी एक अहम गवाह बन जाती है। कई बार लोग अपनी हरकतों से अनजान होते हैं कि कोई उन्हें देख रहा है, पर सीसीटीवी की आंख सब कुछ समेट रही होती है। हालांकि जहां यह सुरक्षा का प्रतीक है, वहीं इसे लेकर निजता पर सवाल भी उठते हैं। क्या हर जगह नजर रखना सही है? लेकिन मौजूदा हालात में, यह आंख समाज को सजग और जवाबदेह बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है। इस तरह, सीसीटीवी आधुनिक युग की वह अदृश्य शक्ति है, जो बिना बोले भी हर किसी को यह एहसास दिलाती है- कोई देख रहा है।

सब पर नजर रखता सीसीटीवी कैमरा



इसीलिए इन दिनों कहते हैं जिंदगी कैमरों की जद में कैद हो गई है। हर पल हर जगह तमाम अदृश्य निगाहें हमें घेरे रहती हैं। **हर शहर में मूस्तेद नजर:** राजधानी दिल्ली में मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियां चढ़ते ही जिस इबारत पर आपकी पहली नजर पड़ती है, वह एक चेतावनी होती है, 'सावधान आप कैमरे की निगाह में हैं।' बैंक में घुसिए, अस्पताल में प्रवेश करिए, कॉलेज की सीढ़ियां चढ़िए, मंदिर की इयोदी लांघिए हर जगह आपको इसी पहलें वाक्य के इन दिनों दर्शन

होते हैं। दिन में ज्यादातर समय कैमरे की जद में रहना अब महज वीवीआईपी लोगों की जिंदगी का सच नहीं है। यह आम महानगरीय लोगों की जिंदगी की कहानी बन चुका है। सिर्फ देश की राजधानी दिल्ली का ही ये हाल नहीं है, मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई, पुणे, बंगलुरु जैसे तमाम महानगरों और अब तो मझोले और छोटे शहरों की भी यही कहानी बनती जा रही है। लखनऊ, कानपुर, भोपाल, जयपुर, गुवाहाटी, बनारस, अमृतसर सबकी यही कहानी है। क्योंकि जिंदगी का

हर पल खतरों, अविश्वास और विश्वासघात से जुड़ गया है।

संभालता सुरक्षा की जिम्मेदारी: कभी लोगों को यादों को सहजने वाला कैमरा, आज लोगों की सुरक्षा का भार संभालता है या कम से कम उसे उसकी बदौलत सुरक्षा का मनोवैज्ञानिक सहाय देता है। कैमरा बिल्कुल नए अवतार में आ चुका है। मोबाइल क्रांति के बाद जब दुनिया की तमाम मशहूर कैमरा बनाने वाली कंपनियां बंद होने के कगार पर पहुंच गई थीं, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि बहुत जल्द कैमरे का यह विलक्षण रूप सामने आएगा। आज कैमरे का पर्याय हो गए हैं सीसीटीवी कैमरे। सीसीटीवी कैमरे आज प्रमुख सेप्टिक के टूल की तरह उभरे हैं।

बढ़ता गया प्रचलन: एक जमाना वह भी था, जब सीसीटीवी कैमरों को दुकानदारों की दुकान का चौकीदार भर समझा जाता था। लेकिन जैसे-जैसे वक्त बदला और तकनीक पहले से कई गुना ज्यादा बेहतर हुई जबकि कीमतें पहले से काफी नीचे आईं तो फिर मानो, इनके इस्तेमाल की बहार ही आ गई। घटती कीमतों की वजह से सीसीटीवी कैमरे आम आदमी की पहुंच में आ गए। आज सीसीटीवी कैमरे न केवल सेप्टिक का एक सेंस देते हैं, बल्कि जहां आपको आंख नहीं पहुंच सकती, वहां तक भी आपको पहुंचाते हैं।

हिंदी फिल्म जगत के महानतम फिल्मकारों में गुमार गुरुदत्त जे.के.ए. क्लासिक फिल्मों की गुरुदत्त की शानदार विरासत को उनकी बहू और पोतियां आज भी संभाले हुए हैं। गुरुदत्त के जन्मसँती वर्ष पर वे, उनकी मातृकता से याद करती हैं। साथ ही उनके जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर एक नजर।

महान फिल्मकार गुरुदत्त की विरासत संभाल रहे परिजन

जन्मशती वर्ष / कैलाश सिंह

महान फिल्मकार और अभिनेता गुरुदत्त का जन्म 9 जुलाई 1925 को बंगलोर (अब बंगलूर) में हुआ था। उनके आई फिल्म 'बाजी' में गीता रॉय ने 'तदवीर से बिगड़ी हुई तकदीर बना ले' गीत गाया था। उनकी मां वसंथी पादुकोण गृहिणी थीं, जो कभी-कभी कहानियां भी लिखा करती थीं। माता-पिता ने उन्हें वसंत कुमार शिवशंकर पादुकोण नाम दिया, लेकिन बाद में उनका नाम बदलकर गुरुदत्त रख दिया गया।

गुरुदत्त के माता-पिता कारवार (कर्नाटक) में रहते थे, लेकिन उन्हें अपना बचपन भवानीपुर (प. बंगाल) में गुजारना पड़ा, जिससे वह बंगाली भी अच्छी बोलने लगे। घर में पैसे की तंगी थी, इसलिए दसवीं के बाद कॉलेज न जा सके। उनके बकुट मामा (बालकिशन बेनेगल, जो श्याम बेनेगल के चाचा और गुरुदत्त की मां के कजिन थे) ने उन्हें उदय शंकर की नृत्य मंडली में शामिल करा दिया। गुरुदत्त ने वहां नृत्य सीखा। कुछ दिन उन्होंने टेलीफोन ऑपरिटर के रूप में भी नौकरी की। लेकिन मन नहीं लगा तो कोलकाता छोड़कर पुणे आ गए जहां प्रभात फिल्म कंपनी में उन्हें नृत्य निर्देशक की नौकरी मिली और फिर जीवन का रुख ही बदल गया।

ऐसे हुई गुरुदत्त-देवानंद की दोस्ती: पुणे में जिस लॉडरी पर गुरुदत्त अपने कपड़े धुलवाते थे, वहीं पर देवानंद के कपड़े भी धुलने आते थे। एक दिन संयोग से दोनों की कमीजें आपस में बदल गईं और दोनों की मुलाकात हुई, जो दोस्ती में बदल गई। गुरुदत्त और देवानंद ने एक-दूसरे से वादा किया, जो भी पहले निर्माता बनेगा, वह दूसरे को अपनी फिल्म में काम देगा। पहले देवानंद निर्माता बन गए और

उन्होंने 'बाजी' के निर्देशन की जिम्मेदारी गुरुदत्त को दी और अपना वादा निभाया। इसी तरह जब गुरुदत्त ने 'सीआईडी' बनाई तो देवानंद को उसमें बतौर हीरो प्रस्त किया।

गीता दत्त से प्रेम और विवाह: सन 1951 में पिता शिवशंकर रंग पादुकोण एक स्कूल टीचर थे और मां वसंथी पादुकोण गृहिणी थीं, जो कभी-कभी कहानियां भी लिखा करती थीं। माता-पिता ने उन्हें वसंत कुमार शिवशंकर पादुकोण नाम दिया, लेकिन बाद में उनका नाम बदलकर गुरुदत्त रख दिया गया।

को गीता रॉय ने गुरुदत्त से शादी कर ली। उनके तीन बच्चे हुए- तरुण, अरुण और नीना। **बहू - पो ति यां संभाल रही हैं विरासत:** गुरुदत्त के पुत्र अरुण के घर में प्रवेश करते ही लिविंग रूम की दीवार पर फिल्म 'प्यासा' (1957) का पोस्टर लगा हुआ दिखाता है। दूसरी दीवार पर ब्लैक एंड वाइट फेमिली फोटो टंगा हुआ है, जिसमें गुरुदत्त, उनकी गायिका पत्नी गीता (राय) दत्त और उनके बच्चे हैं। मुंबई के इस घर में गुरुदत्त की मौजूदगी का एहसास हर जगह होता है। यह गुरुदत्त की बहू इफ्फत का घर है, जिसमें वह अपनी दोनों बेटियों करुणा और गौरी के साथ रहती हैं। इफ्फत ने गुरुदत्त के बेटे अरुण दत्त से शादी की थी, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन वे अपनी दोनों बेटियों के साथ अपने परिवार की महान सिनेमाई विरासत को संभाले हुए हैं। गुरुदत्त की पोती गौरी बताती हैं, 'जब हम छोटे थे, तो हमें अपने दादा के कार्य से परिचय



हमारे पिता ने करवाया था। पुणे में शाम को अकसर बिजली गुल हो जाया करती थी और बिजली आने का इंतजार करते हुए डैडी अपने पैरेंट्स के बारे में बातें किया करते थे।

सिने जगत से जुड़ी हैं पोतियां: चूंकि पोतियों का अपने दादा गुरुदत्त की फिल्मों से परिचय किशोरावस्था में ही हो गया था, इसलिए वे उनके कार्य को बेहतर ढंग से समझ सकीं और तटस्थता के साथ उस पर अपनी राय भी कायम कर सकीं। करुणा को 'प्यासा' ने अधिक प्रभावित किया है, लेकिन उन्हें लगता है कि 'मिस्टर एंड मिससेज 55' (1955) को उतनी प्रशंसा नहीं मिली, जितनी कि मिलनी चाहिए थी। गौरी की पसंदीदा फिल्म 'कागज के फूल' (1959) है।

जब दोनों बहनें फिल्म प्रोफेशनल के तौर पर काम करने लगीं तो कुछ साल पहले उनका परिवार पुणे से मुंबई शिफ्ट हो गया। करुणा सहायक निर्देशक हैं और गौरी पृथ्वी थिएटर से जुड़ी हुई हैं। दोनों बहनें गुरुदत्त की विरासत को आगे बढ़ाने की इच्छुक हैं और उसी दिशा में कार्य कर रही हैं।

गुरुदत्त की जन्मशताब्दी वर्ष का जश्न: गुरुदत्त की जन्मशती आरंभ हो चुकी है। इस बारे में इफ्फत बताती हैं, 'परिवार के ऐसे अवसरों का हम प्राइवेटली जश्न मनाते हैं। लेकिन हम परिवार की परंपरा का पालन करते हुए अपने दिवंगत सदस्यों के पसंदीदा व्यंजन तैयार करके उन्हें पक्षियों को खिलाते हैं। यह परंपरा अरुण ने शुरू की थी।' गौरी भावुक होकर बताती हैं, 'हालांकि हमारे दादा गुरुदत्त की हमेशा ही हमारे जीवन में प्रभावशाली मौजूदगी रही है, लेकिन इस साल हम उसे कुछ अधिक ही महसूस कर रही हैं, क्योंकि 9 जुलाई 2025 को अगर वे होते तो सी बरस के हो गए होते। *

